20 sep 2026 WEEKLY.qxd 9/19/2026 6:13 PM Page 1

श्रमसाधना

श्रम की शक्ति, राष्ट्र की प्रगति

हम बनेंगे आपकी आवाज
स्कैन करें और चैनल से जुड़े

shramsadhnagwl@gmail.com

www.shramsadhnanews.com

साप्ताहिक

RNI रजि. क्र. 45334/74

वर्ष : 52, अंक : 38 ग्वालियर, रविवार 20 सितम्बर 2026
विक्रम संवत् 2083 पृष्ठ 12, मूल्य 1 रुपया

डाक पंजीयन
डाक L-2-13/समा.पत्र/पं. 40020250/22-23

मुख्यमंत्री ने कहा—आर्थिक कठिनाई प्रतिभा की राह में बाधा नहीं बनेगी, सरकार उपलब्ध कराएगी आवश्यक संसाधन

मेधावी विद्यार्थियों को मिली स्कूटी, सपनों को मिली नई रफ्तार

भोपाल जीएनएस

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि विद्यार्थियों की मेहनत और उपलब्धियों को प्रोत्साहित करना परिवार, समाज और सरकार का दायित्व है। आर्थिक कठिनाइयों या संसाधनों की कमी के कारण किसी प्रतिभावान विद्यार्थी की प्रगति नहीं रुकनी चाहिए। इसी उद्देश्य से सरकार विद्यार्थियों को आवश्यक संसाधन और अवसर उपलब्ध कराने के लिए संकल्पित है। मुख्यमंत्री शनिवार को भोपाल के सुभाष स्कूल में मुख्यमंत्री स्कूटी योजना के राज्य स्तरीय वितरण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

कार्यक्रम में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा 12वीं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रदेश के 7,400 से अधिक मेधावी विद्यार्थियों को स्कूटी वितरित की गई। योजना के तहत प्रथम प्रयास में कक्षा 12वीं में 70 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त कर विद्यालय में प्रथम स्थान हासिल करने वाले विद्यार्थियों को इसका लाभ दिया जाता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि स्कूटी केवल आवागमन का साधन नहीं, बल्कि विद्यार्थियों की प्रतिभा, परिश्रम और उपलब्धि का सम्मान है। यह उन्हें उच्च शिक्षा और अपने लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ने के लिए आत्मविश्वास भी देगी। उन्होंने कहा कि सरकार विद्यार्थियों को निःशुल्क पुस्तकें, गणवेश और साइकिल जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध करा रही है, ताकि आर्थिक परिस्थितियां उनकी पढ़ाई में बाधा न बनें।

बेटियों को अवसर मिलने से मजबूत होगा परिवार : मुख्यमंत्री ने कहा कि बेटियों को शिक्षा और आगे बढ़ने के अवसर मिलने से केवल उनका जीवन नहीं बदलता, बल्कि परिवार और समाज भी सशक्त होता है। मेधावी छात्राओं को स्कूटी मिलने से उच्च शिक्षा के लिए आवागमन आसान होगा और उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में शिक्षा के विस्तार और गुणवत्ता सुधार को प्राथमिकता दी जा रही है। सरकार ने वर्ष 2025-26 के बजट में स्कूल शिक्षा के लिए 38 हजार करोड़ रुपए का प्रावधान किया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में सांदीपनि विद्यालयों के माध्यम से आधुनिक सुविधाओं के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने पर जोर दिया जा रहा है।

विद्यार्थियों से जाना भविष्य का लक्ष्य : मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम के दौरान मेधावी विद्यार्थियों से संवाद कर उनके भविष्य के लक्ष्यों की जानकारी ली। मेरिट सूची में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाली खुशी राय ने बताया कि वह चार्टर्ड अकाउंटेंट बनने की तैयारी कर रही हैं। किसान परिवार से आए आकाश साहू ने कृषि आधारित उद्यम शुरू करने की इच्छा जताई।

मिनी जैन ने नीट परीक्षा उत्तीर्ण कर न्यूरो सर्जन बनने का लक्ष्य बताया, जबकि रानी सांपले ने उच्च शिक्षा के बाद वकील बनने की इच्छा व्यक्त की। खुशी यादव ने चिकित्सक बनने और शिव कुमार कौल ने सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग के क्षेत्र में आगे बढ़ने की बात कही।

स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री उदय प्रताप सिंह ने कहा कि मेधावी विद्यार्थियों को मिली स्कूटी प्रदेश के अन्य विद्यार्थियों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनेगी। जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह ने कहा कि सरकार बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रयासरत है। कार्यक्रम में जनप्रतिनिधि, स्कूल शिक्षा विभाग के अधिकारी और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

माधव महाविद्यालय में नशामुक्ति जागरूकता कार्यक्रम, विद्यार्थियों ने लिया नशे से दूर रहने का संकल्प

नशामुक्त युवा ही विकसित भारत की सशक्त नींव : डॉ. विनोद मुद्गल

ग्वालियर जीएनएस

माधव महाविद्यालय, ग्वालियर की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा क्षेत्रीय निदेशालय मध्य प्रदेश-छत्तीसगढ़ के निर्देशानुसार 'विकसित भारत के लिए नशामुक्त युवा संकल्प अभियान' के अंतर्गत जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. विनोद मुद्गल ने विद्यार्थियों को नशे के दुष्प्रभावों से अवगत कराते हुए नशामुक्त समाज के निर्माण में युवाओं की भूमिका पर जोर दिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के पूजन एवं वंदे मातरम् के सामूहिक गायन से हुआ। मुख्य अतिथि डॉ. विनोद मुद्गल ने कहा कि तंबाकू एवं अन्य नशीले पदार्थ स्वास्थ्य के लिए अत्यंत घातक हैं। इनके सेवन से कैंसर सहित अनेक गंभीर बीमारियां हो सकती हैं। शराब का सेवन लिवर को प्रभावित करता है, वहीं नशीले पदार्थों की अधिक मात्रा गंभीर स्वास्थ्य संकट उत्पन्न कर सकती है।

उन्होंने कहा कि नशे का दुष्प्रभाव केवल नशा करने वाले व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता,

बल्कि उसका असर पूरे परिवार और समाज पर पड़ता है। उन्होंने युवाओं से नशे से पूरी तरह दूर रहने तथा अपने आसपास के लोगों को भी नशे के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करने का आह्वान किया।

युवा सामाजिक बदलाव के प्रमुख वाहक : अध्यक्षीय उद्बोधन में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शिव कुमार शर्मा ने कहा कि देश की नीतियों और अभियानों में युवाओं की सहभागिता महत्वपूर्ण है, क्योंकि युवा सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख वाहक हैं। विकसित भारत के संकल्प को साकार करने के लिए युवाओं का स्वस्थ, जागरूक और नशामुक्त होना आवश्यक है। उन्होंने विद्यार्थियों से स्वयं नशे से दूर रहने के साथ समाज में भी नशामुक्ति का संदेश पहुंचाने का आह्वान किया।

इस अवसर पर डॉ. दीपक शिंदे ने विद्यार्थियों एवं स्वयंसेवकों को नशामुक्ति की शपथ दिलाई। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने नशामुक्ति का संदेश देने वाले नाटक का मंचन भी किया, जिसे उपस्थितजनों ने सराहा।

कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी डॉ. सरिता दीक्षित ने किया, जबकि आभार लेफ्टिनेंट मुलायम सिंह ने व्यक्त किया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना एवं राष्ट्रीय कैडेट कोर के बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

राहुल गांधी का कांग्रेस नेताओं ने किया स्वागत

इंदौर जीएनएस। नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के इंदौर पहुंचने पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं और कार्यकर्ताओं ने एयरपोर्ट पर उनका स्वागत किया। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह सहित पार्टी के कई नेता और कार्यकर्ता इस दौरान मौजूद रहे।

राहुल गांधी शनिवार को इंदौर में आयोजित 'छात्रों की गूंज' कार्यक्रम को संबोधित करेंगे। कार्यक्रम में विद्यार्थियों और युवाओं से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर चर्चा प्रस्तावित है।

राहुल गांधी के इंदौर आगमन के दौरान एयरपोर्ट पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने उनका स्वागत किया। इस दौरान पार्टी के स्थानीय नेताओं और कार्यकर्ताओं की मौजूदगी रही।

धार में आयोजनों को लेकर विपक्ष और जागरूक नागरिकों ने उठाए सवाल

पीएम मोदी के जन्मदिन आयोजन में सरकारी तंत्र की भूमिका पर उठे सवाल

धार जीएनएस

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन और उनके 25 वर्षों के सार्वजनिक जीवन की उपलब्धियों के उपलक्ष्य में मध्यप्रदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों को लेकर सरकारी तंत्र की भूमिका पर सवाल उठाए गए हैं। आलोचकों का कहना है कि आयोजनों में प्रशासनिक अमले की सक्रियता दिखाई दी, जबकि आम लोगों की सहभागिता अपेक्षाकृत कम नजर आई।

सरकारी अमले की सक्रियता पर सवाल : आलोचकों के अनुसार, कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए प्रशासनिक स्तर पर व्यापक तैयारियां की गईं। आयोजनों में भाजपा कार्यकर्ताओं, जनप्रतिनिधियों, नेताओं और सरकारी अधिकारी-कर्मचारियों की मौजूदगी रही। वहीं, आम नागरिकों की भागीदारी सीमित रहने का दावा किया गया है। इसे लेकर यह सवाल उठाया जा रहा है कि ऐसे आयोजनों में सरकारी तंत्र की भूमिका कितनी होनी चाहिए।

जनहित से जुड़े आयोजनों की जरूरत : स्थानीय स्तर पर उठ रही आपत्तियों में कहा गया है कि सरकारी मशीनरी और संसाधनों का उपयोग प्राथमिक रूप से जनसेवा से जुड़े कार्यों में होना चाहिए। आलोचकों का तर्क है कि यदि ऐसे आयोजनों को राजनीतिक या संगठनात्मक गतिविधि के रूप में आयोजित किया जाता, तो पार्टी कार्यकर्ताओं की भागीदारी के साथ संगठनात्मक गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलता और प्रशासनिक तंत्र को इससे अलग रखा जा सकता था।

प्रशासनिक तटस्थता का मुद्दा : आयोजन को लेकर प्रशासनिक तटस्थता का मुद्दा भी उठाया गया है। आलोचकों का कहना है कि किसी राजनीतिक दल या नेता से जुड़े कार्यक्रमों में सरकारी संसाधनों और अमले की भूमिका सीमित रहनी चाहिए, ताकि प्रशासनिक व्यवस्था की निष्पक्षता बनी रहे।

सेवा गतिविधियों को संगठनात्मक रूप देने की मांग : आलोचकों के मुताबिक, प्रधानमंत्री के जन्मदिन और सार्वजनिक जीवन की उपलब्धियों से जुड़े कार्यक्रमों को भाजपा के संगठनात्मक स्तर पर आयोजित किया जाता तो कार्यकर्ताओं को सेवा, सामाजिक सरोकार और संगठनात्मक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी का अवसर मिलता। उनका कहना है कि ऐसे कार्यक्रमों का स्वरूप सेवा गतिविधियों पर केंद्रित किया जा सकता था।

20 sep 2026 WEEKLY.qxd 9/19/2026 6:13 PM Page 2

गणेश उत्सव भगवान गणेश को समर्पित प्रमुख हिंदू त्योहारों में से एक है. इस पर्व की शुरुआत गणेश चतुर्थी से होती है और भक्त घरों और पंडालों में भगवान गणेश की प्रतिमा स्थापित कर विधि-विधान से उनकी पूजा करते हैं. साल 2026 में गणेश चतुर्थी 14 सितंबर, सोमवार को मनाई जाएगी. भगवान गणेश को प्रथम पूज्य और विघ्नहर्ता माना जाता है, इसलिए किसी भी शुभ काम से पहले उनकी पूजा करने की परंपरा है. गणेश उत्सव के दौरान भक्त गणपति बप्पा से सुख-समृद्धि और जीवन के सभी विघ्न दूर करने की कामना करते हैं.

महाभारत लिखते-लिखते गणेश जी को क्यों तोड़ना पड़ गया था अपना दांत? जानें इसकी कथा

गणेश चतुर्थी के दिन भक्त भगवान गणेश की प्रतिमा को पूरे उत्साह के साथ घर लेकर आते हैं. इसके बाद अपनी परंपरा के अनुसार कई लोग डेढ़ दिन, तीन दिन, पांच दिन, सात दिन या 10 दिन तक गणपति की पूजा करते हैं. अनंत चतुर्दशी के दिन गणेश जी की प्रतिमा का विसर्जन किया जाता है. गणपति विसर्जन के पीछे भी एक पौराणिक मान्यता जुड़ी हुई है. कहा जाता है कि भगवान गणेश ने महाभारत का लेखन पूरा करने के बाद अपने शरीर की गर्मी शांत करने के लिए मिट्टी में अपने शरीर को ठंडा किया था. इसी से गणेश प्रतिमा के विसर्जन की परंपरा को जोड़ा जाता है.

भगवान गणेश से जुड़ी ऐसी ही कई पौराणिक कथाएं हैं, जिनमें उनके रूप, बुद्धि और त्याग का वर्णन मिलता है. इन्हीं में से एक कथा उनके टूटे हुए दांत से जुड़ी है. आपने भगवान गणेश की तस्वीरों और प्रतिमाओं में अक्सर उन्हें एक दांत के साथ देखा होगा. लेकिन क्या आप जानते हैं कि गणेश जी का एक दांत कैसे टूटा और इसका संबंध महाभारत के लेखन से कैसे जुड़ा है?

गणेश जी ने तोड़ा था अपना दांत

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, महाभारत की रचना महर्षि वेद व्यास ने की थी, लेकिन इसे लिपिबद्ध करने का काम भगवान गणेश ने किया था. जब महर्षि वेद व्यास ने इस महाग्रंथ को लिखवाने का निर्णय लिया, तो उन्होंने भगवान गणेश को इसका लेखक चुना. ऐसा कहा जाता है कि गणेश जी ने महर्षि वेद व्यास के सामने एक शर्त रखी थी. उन्होंने कहा कि व्यास जी को महाभारत का वाचन बिना रुके लगातार करना होगा. अगर वे बीच में रुक गए तो गणेश जी भी लिखना बंद कर देंगे.

व्यास जी ने भी गणेश जी के सामने अपनी एक शर्त रख दी. उन्होंने कहा कि गणेश जी प्रत्येक श्लोक को उसका अर्थ समझने के बाद ही लिखेंगे. गणेश जी ने उनकी यह शर्त स्वीकार कर ली और महाभारत का लेखन शुरू हो गया.

कलम टूटने पर तोड़ लिया अपना दांत

महाभारत के श्लोकों का लेखन लगातार चल रहा था. इसी दौरान एक समय ऐसा आया जब भगवान गणेश की लेखनी यानी कलम टूट गई. उनके सामने लेखन का काम रुकने की स्थिति पैदा हो गई, लेकिन व्यास जी की शर्त के अनुसार गणेश जी लिखना बीच में नहीं रोक सकते थे.

ऐसे में गणेश जी ने बिना समय गंवाए अपना एक दांत तोड़ लिया. उन्होंने उसी दांत को लेखनी की तरह इस्तेमाल किया और महाभारत लिखना जारी रखा. इस तरह लेखन कार्य में कोई रुकावट नहीं आई और महर्षि वेद व्यास द्वारा बोले गए श्लोकों को गणेश जी लगातार लिपिबद्ध करते रहे.

गणेश जी के टूटे दांत का यही है रहस्य

इसी पौराणिक कथा की वजह से भगवान गणेश को 'एकदंत' भी कहा जाता है. उनका एक दांत टूटने की यह कथा त्याग, समर्पण और अपने संकल्प को पूरा करने की भावना से जुड़ी मानी जाती है. मान्यता के अनुसार, महर्षि वेद व्यास ने महाभारत की कथा का वाचन किया था और भगवान गणेश ने उसे लिखित रूप दिया था.

पौराणिक मान्यता के अनुसार, गणेश जी ने महाभारत का लेखन उत्तराखंड के चमोली जिले में बद्रीनाथ धाम के पास स्थित माणा गांव की गणेश गुफा में बैठकर किया था. वहीं पास में व्यास गुफा भी है, जहां महर्षि वेद व्यास के बैठकर महाभारत की कथा सुनाने की मान्यता है. यह स्थान पवित्र सरस्वती नदी के तट के पास स्थित है.

घर, दुकान या गाड़ी के सामने नींबू-मिर्च लटकी देखना आम बात है। कई लोग इसे बुरी नजर से बचाने वाला उपाय मानते हैं, तो कुछ इसे पुरानी परंपरा के रूप में अपनाते हैं। सवाल यह है कि नींबू-मिर्च टांगने के पीछे सिर्फ अंधविश्वास है या इसका कोई वैज्ञानिक आधार भी है?

दुकान, गाड़ी, घर के सामने क्यों टांगते हैं नींबू-मिर्च? जानिए अंधविश्वास या विज्ञान

बुरी नजर से बचाने की मान्यता

भारतीय लोक मान्यताओं में नींबू-मिर्च को नकारात्मक ऊर्जा और बुरी नजर से बचाने वाला माना जाता है। माना जाता है कि घर या दुकान के मुख्य द्वार पर इसे लगाने से नजर दोष का प्रभाव नहीं पड़ता। हालांकि, यह धार्मिक और लोक मान्यता है, इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।

क्या कीड़े-मकौड़े दूर होते हैं?

नींबू की तेज खट्टी गंध और मिर्च में मौजूद कैप्साइसिन के कारण कुछ कीटों पर असर पड़ सकता है। इसी वजह से पुराने समय में नींबू-मिर्च को प्राकृतिक उपाय के तौर पर इस्तेमाल किए जाने की बात कही जाती है। हालांकि, घर, दुकान या गाड़ी के बाहर नींबू-मिर्च लटकाने से मच्छर और दूसरे कीट निश्चित रूप से दूर रहते हैं, इसका पर्याप्त वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।

हवा शुद्ध करने का दावा कितना सही?

नींबू-मिर्च को धागे में पिरोकर लटकाने से आसपास की हवा शुद्ध होती है, ऐसा दावा भी किया जाता है। लेकिन सामान्य परिस्थितियों में इतनी मात्रा में नींबू-मिर्च हवा को शुद्ध करने का प्रभावी माध्यम है, इसके समर्थन में ठोस वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए इसे वैज्ञानिक तथ्य की बजाय प्रचलित धारणा मानना ज्यादा उचित है।

अलक्ष्मी से जुड़ी मान्यता

पौराणिक मान्यताओं में नींबू-मिर्च को देवी लक्ष्मी की बहन अलक्ष्मी से भी जोड़ा जाता है। लोककथा के अनुसार अलक्ष्मी को खट्टी और तीखी चीजें पसंद हैं। दरवाजे पर नींबू-मिर्च लगाने की मान्यता को इस विश्वास से जोड़ा जाता है कि वह इसे देखकर संतुष्ट हो जाएंगी और घर के भीतर प्रवेश नहीं करेंगी।

मंगलवार या शनिवार को क्यों?

परंपरा के अनुसार मंगलवार और शनिवार को नींबू-मिर्च लगाने के लिए शुभ माना जाता है। कई लोग शुक्रवार को इसे खरीदकर शनिवार सुबह मुख्य द्वार पर लगाते हैं। हालांकि, इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है और यह धार्मिक-लोक मान्यताओं पर आधारित परंपरा है।

कितने नींबू-मिर्च?

लोक मान्यता के अनुसार एक नींबू के साथ पांच या सात हरी मिर्च धागे में पिरोकर लगाई जाती हैं। अलग-अलग क्षेत्रों में इसकी संख्या और तरीका अलग हो सकता है।

कब बदलें?

आमतौर पर नींबू-मिर्च सूखने या खराब होने पर इसे बदल दिया जाता है। कई परिवार हर सात से दस दिन में नई नींबू-मिर्च लगाते हैं। पुराने नींबू-मिर्च को फेंकने का तरीका भी स्थानीय मान्यताओं के अनुसार अलग-अलग होता है।

निष्कर्ष- नींबू-मिर्च लगाने की परंपरा का सबसे मजबूत आधार धार्मिक और लोक मान्यताएं हैं। इसके कुछ व्यावहारिक कारण बताए जाते हैं, लेकिन इसे बुरी नजर दूर करने या हवा शुद्ध करने का वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित उपाय नहीं माना जा सकता।

श्रमसाधना
www.shramsadhnanews.com

युवा किसके साथ है? सांस्कृतिक पहचान के साथ या अस्तित्व के सवाल के साथ?

भारत के राजनीतिक इतिहास में युवाओं ने कभी केवल तालियाँ बजाने का काम नहीं किया। उन्होंने सत्ता से सवाल पूछे हैं, व्यवस्था को चुनौती दी है और कई बार देश की राजनीति की दिशा ही बदल दी है

लगभग पचास वर्ष पीछे जाएँगे तो 1970 के दशक का छात्र आंदोलन दिखाई देता है। गुजरात और बिहार के छात्रों ने महँगाई, भ्रष्टाचार और व्यवस्था के खिलाफ आवाज़ उठाई। जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में वह आंदोलन केवल छात्रों तक सीमित नहीं रहा, उसने पूरे देश की राजनीति की धारा मोड़ दी। 1975 आया तो लोकतंत्र और नागरिक स्वतंत्रता की रक्षा प्रश्न बन गई। 1980-90 के दशक में मंडल के सवाल ने युवा राजनीति को नई दिशा दी और अन्ना आंदोलन ने एक पूरी पीढ़ी को भ्रष्टाचार और जवाबदेही के प्रश्न पर सड़कों तक ला कर खड़ा किया। इन तमाम आंदोलनों में एक समानता थी युवा किसी विचारधारा के अनुयायी नहीं थे, वे अपने भविष्य के बारे में सवाल पूछ रहे थे ।

÷कारवाँ रुका नहीं करते किसी के मुड़ जाने से,
सवाल ज़िंदा रहता है हर नस्ल के आने से÷

यही वह बिंदु है जहाँ से उज्जैन और इंदौर के दो आगामी कार्यक्रमों को समझना चाहिए।

उज्जैन में 'युवा धर्म संसद' हो रही है। 24 राज्यों से 1,700 से अधिक युवाओं के इसमें शामिल होने की बात कही गई है। कार्यक्रम में धर्म, संस्कृति, राष्ट्र, शिक्षा, विज्ञान और आधुनिक जीवन की चुनौतियों पर चर्चा होगी सरसंघचालक मोहन भागवत जी 18 सितंबर को वहाँ युवाओं से संवाद करेंगे। ठीक अगले दिन इंदौर में राहुल गांधी जी 'छात्रों की गूंज' के मंच पर होंगे।

ऊपर से देखने पर दोनों कार्यक्रम एक जैसे लग सकते हैं दोनों युवाओं से संवाद कर रहे हैं, दोनों युवाओं के बीच जा रहे हैं, दोनों यही कह रहे हैं कि युवा देश का भविष्य हैं। लेकिन असली अंतर मंच पर नहीं, सवाल की दिशा में है। एक मंच पूछता है हम कौन हैं? दूसरा मंच पूछता है हमारे साथ हो क्या रहा है ? यही बुनियादी फर्क है।

धर्म, संस्कृति, सभ्यता और अपनी जड़ों पर संवाद अपने आप में गलत नहीं है। भारत की आत्मा को समझने के लिए ऐसी चर्चा ज़रूरी भी है। लेकिन जब देश का एक नौजवान परीक्षा की तैयारी में पाँच साल लगा देता है और पेपर लीक हो जाता है, जब लाखों रुपये खर्च करके परिवार बच्चे को पढ़ाता है और नौकरी नहीं मिलती, जब प्रतियोगी परीक्षाएँ बार-बार विवादों में घिरती हैं, जब शिक्षा लगातार महँगी होती जाती है और उसके बाद भी नौकरी नहीं मिलती है तब उसके सामने पहला सवाल यह नहीं होता कि उसकी सांस्कृतिक पहचान क्या है। उसका पहला सवाल होता है मेरी परीक्षा कब होगी? मुझे नौकरी कब मिलेगी? मेरे साथ न्याय कब होगा?

और यहीं से ÷छात्रों की गूंज' का अर्थ निकलता है। राहुल गांधी जी ने जून 2026 में इस अभियान की शुरुआत करते हुए छात्रों से पेपर लीक, महँगी फीस, परीक्षा व्यवस्था और रोजगार जैसे सवालों पर अपनी बात रखने और सुझाव देने को कहा।

यह फर्क छोटा नहीं है, क्योंकि राजनीति में युवाओं को संबोधित करने के दो ही रास्ते हो सकते हैं। पहला रास्ता उन्हें उनकी पहचान की याद दिलाइए और धर्म, राष्ट्र और कभी पूरे न होने वाले सपनों के सहारे कुछ समय के लिए अपनी ओर आकर्षित करके रखिए, ताकि वे वास्तविक धरातल की ओर देख ही न पाएँ । दूसरा रास्ता है कि उन्हें उनके अधिकारों की याद दिलाई जाए, उन अधिकारों की पूर्ति के लिए यथासंभव प्रयास किए जाएँ, और सरकार को समस्याओं के समाधान निकालने के लिए विवश किया जाए। पहला रास्ता भावनाएँ पैदा करता है, दूसरा जवाबदेही। और लोकतंत्र की असली परीक्षा भावनाओं से ज़्यादा जवाबदेही में होती है।

मोहन भागवत जी के हाल के वक्तव्यों में युवाओं को लेकर एक उल्लेखनीय बदलाव दिखता है। अगस्त 2026 में त्द्गठ्ठ ँ से जुड़े अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि युवाओं की शिकायतें वास्तविक हैं और लोकतंत्र में विरोध संवाद का एक माध्यम हो सकता है। उन्होंने शिक्षा व्यवस्था में सुधार और युवाओं की बात सुने जाने की ज़रूरत पर भी ज़ोर दिया यह बात स्वागत योग्य है, क्योंकि लोकतंत्र में असहमति को सुनना किसी एक दल या विचारधारा की संपत्ति नहीं हो सकता।

तो सवाल यह उठता है क्या युवाओं को केवल सुना जाना चाहिए, या उनकी समस्याओं की राजनीतिक कीमत भी तय होनी चाहिए? युवा से सिर्फ़ यह कह देना पर्याप्त नहीं कि तुम्हारी पीड़ा वास्तविक है। अगला सवाल यह है कि उस पीड़ा को बदलने के लिए व्यवस्था में क्या बदलेगा?

÷ज़ुबाँ से सुन लेना काफ़ी नहीं होता, ऐ हाकिम,
दिलों का हाल बदलना ही असली इंसाफ़ होता है।÷

राहुल गांधी की राजनीति का अलग रास्ता संभवतः यहीं से शुरू होता है। उनके पिछले लगभग दो दशकों को केवल चुनावी सफलता-असफलता के पैमाने से देखा जाए तो उनकी राजनीति का एक महत्वपूर्ण पक्ष छूट जाता है। 2007 में जब उन्हें युवा कांग्रेस और ह्रस्द्ब की जिम्मेदारी मिली, तभी से उन्होंने संगठन में युवाओं की भागीदारी और आंतरिक लोकतंत्र पर ज़ोर देना शुरू कर दिया था। उसके बाद उनका राजनीतिक सफर लगातार युवाओं, छात्रों, किसानों, श्रमिकों और सामाजिक न्याय के सवालों से जुड़ता चला गया। आज 'छात्रों की गूंज' उसी यात्रा का एक नया अध्याय है।

यहाँ राहुल गांधी युवाओं से यह नहीं कह रहे कि मेरे विचार को मानो या सिर्फ़ मुझे सुनो। वे कह रहे हैं अपना अनुभव बताओ, उसे साझा करो। यह फर्क महत्वपूर्ण है। प्रयागराज में 'छात्रों की गूंज' के दौरान छात्रों और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवाओं ने परीक्षा व्यवस्था, रोजगार और भविष्य की अनिश्चितता को लेकर अपनी पीड़ा साझा की,जिस भी संवेदनशील व्यक्ति ने उसे सुना, वह देश में युवाओं की स्थिति देखकर चिंतित हुए बिना नहीं रह सका। राहुल गांधी के लिए युवा केवल भविष्य की राजनीतिक शक्ति नहीं है, वर्तमान की युवा-स्थिति भारत की जीवित समस्या है।

अब यह बहस धर्म बनाम लोकतंत्र की नहीं, युवाओं की प्राथमिकता की है। इसे धर्म बनाम धर्मनिरपेक्षता बनाना भी ग़लत होगा। भारत में धर्म है और सदैव रहेगा। आस्था है और सदैव रहेगी। संस्कृति है, सनातन परंपरा है, जैन दर्शन है, बौद्ध विचार है, सिख परंपरा है और भारत की खूबसूरती यही है कि इन सबके बीच लोकतंत्र भी रहेगा। लेकिन लोकतंत्र का अर्थ यह है कि किसी विद्यार्थी को उसकी आस्था के कारण नहीं, उसकी योग्यता के आधार पर अवसर मिले। किसी परीक्षा का प्रश्नपत्र किसी की राजनीतिक पहचान देखकर नहीं, बल्कि निष्पक्ष व्यवस्था के तहत सुरक्षित रहे और किसी नौजवान को अपने भविष्य के लिए सत्ता से सवाल पूछने पर देशद्रोही न कहा जाए।

यही वह कसौटी है जिस पर युवाओं के लिए हर राजनीतिक प्रयास को परखा जाना चाहिए। असली प्रश्न यह नहीं कि उज्जैन की युवा धर्म संसद बड़ी है या इंदौर की छात्रों की गूँज। 17-18 सितंबर को उज्जैन में युवा धर्म संसद होगी और 19 सितंबर को राहुल गांधी इंदौर में 'छात्रों की गूंज' से युवाओं के बीच होंगे। मीडिया और राजनीति इसे दो राजनीतिक धाराओं के आमने-सामने आने के रूप में देख सकती है, लेकिन इतिहास की दृष्टि से यह उससे बड़ा प्रश्न है कि भारत का युवा आने वाले समय में किस तरह का नागरिक बनेगा?

क्या वह केवल अपनी पहचान पर गर्व करने वाला नागरिक होगा या ऐसा नागरिक भी जो अपनी ही सरकार से सवाल पूछ सके? क्या उसे केवल अतीत की महानता सुनाई जाएगी या वर्तमान की कमियों पर भी प्रश्न करने दिया जाएगा? क्या उसे केवल यह बताया जाएगा कि भारत महान है या यह भी कि भारत को महान बनाए रखने के लिए उसे व्यवस्था की कमियों से लड़ना होगा?

आज राहुल गांधी जी की राजनीति की सबसे बड़ी ताक़त और शायद सबसे बड़ी चुनौती भी यही है कि वे युवाओं के भीतर मौजूद असंतोष को केवल भावना में नहीं, प्रश्न में बदलना चाहते हैं। और लोकतंत्र में प्रश्न से अधिक शक्तिशाली कोई राजनीतिक औज़ार नहीं है क्योंकि जिस दिन युवा प्रश्न पूछना छोड़ देता है, उसी दिन लोकतंत्र कमज़ोर होना शुरू हो जाता है।

इसलिए असली मुक़ाबला दो नेताओं का नहीं, दो व्यक्तियों का भी नहीं यह दो राजनीतिक दृष्टियों का अंतर है। एक दृष्टि युवा को एक बड़े सांस्कृतिक आख्यान का हिस्सा बनाती है और निरंतर यह अहसास कराना चाहती है कि वह कौन है। दूसरी दृष्टि युवा से कहती है कि वह अपने जीवन के अनुभव को राजनीति का सवाल बनाए और अपने व अपने देश के भविष्य को सुरक्षित करें। एक उससे पूछती है तुम्हारी पहचान क्या है? दूसरी पूछती है तुम्हारी समस्या क्या है?

भारत को शायद दोनों प्रश्नों की ज़रूरत है। लेकिन अगर कोई मुझसे पूछे कि लोकतंत्र को आगे बढ़ाने के लिए इनमें से कौन-सा प्रश्न अधिक ज़रूरी है, तो मेरा उत्तर स्पष्ट होगा ÷तुम कौन हो÷ से पहले यह पूछना ज़रूरी है कि ÷तुम्हारे साथ क्या हो रहा है।÷ क्योंकि पहचान हमें अतीत से जोड़ती है, लेकिन सवाल हमें भविष्य की ओर ले जाते हैं। और भारत का युवा केवल अतीत का उत्तराधिकारी नहीं, भारत के भविष्य का निर्माता है। इसलिए 'छात्रों की गूंज' को केवल राहुल गांधी का कार्यक्रम समझना उसकी सीमा तय कर देना होगा। इसे एक बड़े लोकतांत्रिक प्रश्न की तरह देखना चाहिए क्या हम युवाओं को अपने लिए बोलने देंगे, या हमेशा उनकी ओर से बोलते रहेंगे?

मुझे राहुल गांधी जी की राजनीति का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यहीं दिखाई देता है। वे युवाओं से यह कहने की कोशिश कर रहे हैं की मेरे पीछे मत चलो, अपनी आवाज़ उठाओ। और लोकतंत्र में शायद इससे अधिक आधुनिक, अधिक लोकतांत्रिक और अधिक ज़रूरी युवा राजनीति की शुरुआत और कोई नहीं हो सकती।

÷रौशनी उधार की नहीं, अपने चराग़ की माँगो,
सवाल पूछना सीखो, यही असली इंक़लाब है।÷

प्रवीण पाठक
(लेखक ग्वालियर दक्षिण से पूर्व विधायक हैं)

चोट से वापसी के बाद आत्मविश्वास की जरूरत होती है दूसरे टी-20 में अपने शानदार प्रदर्शन पर बोले नीतीश रेड्डी

नई दिल्ली अफगानिस्तान के खिलाफ खेले गए दूसरे टी20 इंटरनेशनल मुकाबले में चोट से वापसी कर रहे नीतीश कुमार रेड्डी को एक बड़ा बूस्ट मिला। नीतीश ने शानदार गेंदबाजी करते हुए 3 विकेट अपने नाम किए, जिसके लिए उन्हें %प्लेयर ऑफ द मैच% भी चुना गया। सीरीज के पहले मैच में औसत प्रदर्शन के बाद, नीतीश ने कहा कि दूसरे मैच में मिले अच्छे प्रदर्शन से उन्हें वह आत्मविश्वास मिला जिसकी उन्हें वापसी के दौरान जरूरत थी।

नीतीश ने बुधवार को बहुत अच्छा लग रहा है। चोट से वापसी करने वाले हर खिलाड़ी को आत्मविश्वास की जरूरत होती है। सच कहूं तो, पहला मैच मेरे लिए उतना अच्छा नहीं रहा था, लेकिन दूसरे मैच में अपने प्रदर्शन से बहुत खुश हूं, क्योंकि किसी भी खिलाड़ी को ऐसे आत्मविश्वास की जरूरत होती है और मुझे उम्मीद है कि मैं इस आत्मविश्वास को आगे भी बनाए रखूंगा। नीतीश ने 24 रन देकर 3 विकेट चटकाए। उन्होंने अहम भूमिका निभाते हुए भारत को अफगानिस्तान को 159/8 पर रोकने और फिर 7 विकेट शेष रहते हुए लक्ष्य हासिल करने में मदद की। 22 वर्षीय खिलाड़ी का यह शानदार प्रदर्शन ऐसे समय आया, जब उन्होंने हाल ही में बताया था कि फिटनेस हासिल करने के लिए उन्होंने बीसीसीआई सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में कड़ी मेहनत की थी। ऑलराउंडर ने टीम में शामिल होने के बाद से भारतीय टीम मैनेजमेंट से मिले आत्मविश्वास का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि इस समर्थन की वजह से वह अपनी जगह की चिंता किए बिना अपने खेल पर ध्यान केंद्रित कर पाए हैं।

उन्होंने आगे कहा, ÷भारतीय टीम का हिस्सा बनना हमेशा से सम्मान की बात रही है। जाहिर है कि मैनेजमेंट ने मुझे काफी मौके दिए हैं और मुझ पर बहुत भरोसा जताया है।

मुझे लगता है कि एक खिलाड़ी को असल में इसी चीज की जरूरत होती है और मुझे मैनेजमेंट से यही मिल रहा है। मैं इससे काफी खुश हूं।÷ हालांकि, चोट से वापसी का सफर मानसिक चुनौती भी लेकर आया। नीतीश ने बताया कि सीओई में लंबे समय तक रहना मानसिक रूप से थका देने वाला होता है, भले ही वहां सभी सुविधाएं और ट्रेनिंग मौजूद हों। ऐसे में करीबी दोस्तों और परिवार से बातचीत ने उन्हें थकान से निपटने में मदद की।

शीर्ष क्रम में बल्लेबाजी थोड़ी मुश्किल, जिम्बाब्वे के खिलाफ शतक लगाने के बाद बोले रेनशॉ

नई दिल्ली जिम्बाब्वे के खिलाफ मंगलवार को खेले गए वनडे सीरीज के पहले मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया के बल्लेबाज मैट रेनशॉ ने शतक लगाया। 2017 के बाद रेनशॉ का यह पहला शतक था और पहला वनडे शतक था। छठे नंबर पर आकर शतक लगाने वाले रैनशॉ ने कहा कि अगर पारी की शुरुआत करते तो शायद वे शतक नहीं बना पाते। रेनशॉ ने कहा, ÷शीर्ष क्रम में बल्लेबाजी करने पर थोड़ी मुश्किल होती है। बीच के ओवरों में जब मैं बल्लेबाजी के लिए आता हूं तो मेरा लक्ष्य उन जगहों पर शॉट लगाना होता है जहां फील्डर नहीं है।÷ उन्होंने कहा, ÷बीच के समय में स्पिन एक बहुत बड़ा फैक्टर था। मैं इसे अपनी ताकत मानता हूं। मैं सच में अपना रोल समझता था। इससे मेरे लिए यह बहुत आसान हो गया। रेनशॉ ने कहा, ÷रेड-बॉल गेम में सीधे बैटिंग ओपनिंग करने जाना, वनडे के 20वें ओवर में दो स्पिनर्स का सामना करने से बहुत अलग रोल है। यह कुछ ऐसा है जिसके लिए मैं जितना हो सके उतनी अच्छी तरह तैयारी करने की कोशिश कर रहा हूं। मेरे लिए, मानसिकता सबसे बड़ी चीज है। मैं तकनीक के बारे में ज्यादा बात नहीं करता ङ्क यह ऐसी चीज नहीं है जिसके बारे में मैं बात करना पसंद करता हूं।

20 sep 2026 WEEKLY.qxd 9/19/2026 6:13 PM Page 4

निष्पक्षता-विश्वसनीयता एवं जनहित का संवाहक
श्रमसाधना

संपादकीय

यूपीआई पर शुल्क लगा तो जेब और डिजिटल भुगतान की आदत पर कितना पड़ेगा असर?

यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस यानी यूपीआई ने भारत में डिजिटल भुगतान की व्यवस्था को पूरी तरह बदल दिया है। कुछ ही सेकंड में भुगतान, बैंक खाते से सीधे धन हस्तांतरण और हर जगह आसानी से उपलब्ध इस सुविधा ने नकदी पर निर्भरता काफी कम की है। आज चाय की दुकान, सब्जी वाले, किराना व्यापारी से लेकर बड़े कारोबारी प्रतिष्ठानों तक यूपीआई भुगतान आम हो चुका है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सामान्य उपभोक्ता को इस सुविधा के लिए अलग से कोई शुल्क नहीं देना पड़ता।

ऐसे में यूपीआई के कुछ लेन-देन पर संभावित शुल्क की चर्चा ने आम उपभोक्ता के बीच स्वाभाविक चिंता पैदा की है। हालांकि शुल्क की चर्चा को उसके स्वरूप और लागू होने वाली व्यवस्था के संदर्भ में समझना जरूरी है। इसका वास्तविक असर इस बात पर निर्भर करेगा कि शुल्क किस प्रकार के लेन-देन पर लगाया जाता है, इसकी दर क्या होती है और इसका भुगतान उपभोक्ता, व्यापारी या भुगतान व्यवस्था से जुड़े किसी अन्य पक्ष को करना होगा।

आम आदमी के लिए छोटी रकम का भुगतान भी महत्वपूर्ण हो सकता है। यदि कोई व्यक्ति दिन में कई बार यूपीआई के माध्यम से पांच-दस रुपये से लेकर कुछ सौ रुपये तक का भुगतान करता है, तो प्रत्येक लेन-देन पर लगने वाला छोटा शुल्क भी समय के साथ अतिरिक्त खर्च बन सकता है। विशेष रूप से छोटे मूल्य वाले बार-बार होने वाले भुगतान में उपभोक्ता शुल्क को लेकर अधिक सतर्क हो सकते हैं।

इसका असर छोटे दुकानदारों और रेहड़ी-पटरी वालों पर भी पड़ सकता है। छोटे कारोबार में लाभ का अंतर सीमित होता है। ऐसे में यदि भुगतान प्राप्त करने पर कोई अतिरिक्त लागत आती है तो व्यापारी के सामने उसे स्वयं वहन करने या किसी रूप में कीमत में समायोजित करने का प्रश्न खड़ा हो सकता है। दूसरी ओर, यदि शुल्क का भार उपभोक्ता पर पड़ता है तो कुछ लोग छोटे भुगतानों के लिए दोबारा नकदी का इस्तेमाल करना पसंद कर सकते हैं।

यूपीआई की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक यह रही है कि इसने डिजिटल भुगतान को केवल बड़े शहरों और बड़े कारोबार तक सीमित नहीं रखा। छोटे शहरों, कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों में भी लोग इसका इस्तेमाल कर रहे हैं। डिजिटल भुगतान की सरलता ने बैंकिंग व्यवस्था से दूर रहे अनेक लोगों को औपचारिक वित्तीय व्यवस्था से जोड़ने में मदद की है। इसलिए शुल्क से जुड़े किसी भी बदलाव का आकलन केवल भुगतान प्रणाली की लागत के आधार पर नहीं, बल्कि उसके सामाजिक और आर्थिक प्रभावों को ध्यान में रखकर करना होगा।

हालांकि, डिजिटल भुगतान व्यवस्था को संचालित करने में भी लागत आती है। बैंक, भुगतान सेवा प्रदाता और तकनीकी ढांचा उपलब्ध कराने वाली संस्थाओं को लगातार निवेश करना पड़ता है। इसलिए लंबे समय तक ऐसी व्यवस्था बनाए रखने के लिए आर्थिक स्थिरता भी आवश्यक है। चुनौती यह है कि व्यवस्था की लागत और आम लोगों के लिए डिजिटल भुगतान की किफायत के बीच संतुलन कैसे बनाया जाए।

प्रान्तीय कार्यालय : 76 शबरी कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर जोन-2 भोपाल, फोन : 0755-2579530
प्रान्तीय ब्यूरो प्रमुख : एल.एन. तवर, 9827781209
प्रान्तीय ब्यूरो : डॉ. जानकी अहिरवार 9406580345
Email:shramsadhnagwl@gmail.com

भारतवंशी चीतों की बढ़ती संख्या : कूनो में चार साल बाद बढ़ा चीता कुनबा

पुनर्वास की सफलता के बीच खुले जंगल में शावकों के सामने अब भी चुनौती

प्रमोद भार्गव

दुर्लभ चीता पुनर्वास परियोजना को भारत में चार वर्ष पूरे हो गए हैं। 17 सितंबर 2022 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मध्यप्रदेश के श्योपुर जिले में स्थित कूनो राष्ट्रीय उद्यान में नामीबिया से लाए गए चीतों को छोड़कर इस महत्वाकांक्षी परियोजना की शुरुआत की थी। इसके बाद दक्षिण अफ्रीका से भी चीते लाकर यहां बसाए गए। चार वर्ष की अवधि में कूनो की धरती पर चीतों की एक नई पीढ़ी ने जन्म लिया है। भारत से करीब सात दशक पहले विलुप्त हो चुके इस वन्यजीव की वापसी अब केवल विदेश से आए चीतों तक सीमित नहीं है, बल्कि भारत में जन्मे चीतों का कुनबा भी आकार लेने लगा है।

चीता परियोजना की शुरुआत के समय सबसे बड़ी चुनौती इन विदेशी चीतों को भारतीय जलवायु और पर्यावरण के अनुकूल बनाना थी। अफ्रीकी जंगलों और भारत के वन क्षेत्रों की परिस्थितियों में अंतर होने के कारण विशेषज्ञों के सामने कई सवाल थे। शुरुआती दौर में कुछ वयस्क चीतों और शावकों की मौत ने परियोजना की सफलता पर प्रश्न भी खड़े किए। इसके बावजूद कूनो में चीतों का प्रजनन होना इस परियोजना की महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जा सकता है।

भारत की धरती पर अब तक 49 चीता शावकों का जन्म हुआ है, जिनमें से 32 जीवित हैं। कूनो में जन्मी मादा चीताओं ने कई बार शावकों को जन्म दिया है। वर्तमान में चार मादा चीताओं के 19 शावक स्वस्थ रूप से बढ़ रहे हैं। मानवीय निगरानी में इनकी देखभाल की जा रही है। अफ्रीका के प्राकृतिक आवासों में जन्म लेने वाले बहुत से शावकों के वयस्क होने से पहले ही मर जाने की तुलना में कूनो में शावकों की जीवित रहने की स्थिति बेहतर बताई जा रही है। इसमें वनकर्मियों की सतत निगरानी, भोजन की उपलब्धता और सुरक्षा व्यवस्था की भूमिका महत्वपूर्ण है।

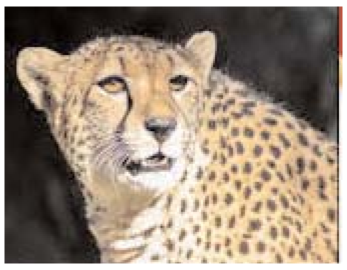

दरअसल, कूनो का प्रबंधन बाहरी हस्तक्षेप से अपेक्षाकृत मुक्त रखने का प्रयास किया गया है। यही कारण है कि अफ्रीका से लाए गए चीतों को यहां प्राकृतिक परिस्थितियों में ढलने का अवसर मिला। जिस भारतीय वातावरण को शुरुआत में अफ्रीकी चीतों के लिए प्रतिकूल माना जा रहा था, उसी में अब उनका प्रजनन होना यह संकेत देता है कि कूनो का पारिस्थितिक परिवेश इनके लिए धीरे-धीरे अनुकूल बन रहा है। मध्यप्रदेश के जंगलों में पहले से बाघ, तेंदुए और अन्य वन्यजीव मौजूद हैं। अब चीता भी राज्य के वन्यजीव संसार का हिस्सा बनता दिखाई दे रहा है।

हालांकि इस उपलब्धि के साथ एक गंभीर चुनौती भी सामने आई है। बाड़े या नियंत्रित वातावरण में जन्मे शावकों के जीवित रहने की स्थिति बेहतर है, लेकिन खुले जंगल में जन्म लेने वाले शावकों के सामने प्राकृतिक जोखिम कहीं अधिक हैं। कूनो में जन्मी मादा चीता केजीपी-12 ने 11 अप्रैल 2026 को खुले जंगल में चार शावकों को जन्म देकर एक नया इतिहास बनाया था। यह भारत में जन्मी किसी मादा चीता द्वारा खुले जंगल में प्राकृतिक प्रसव का पहला मामला था। लेकिन करीब एक महीने बाद 12 मई को चारों शावक मृत पाए गए। इसके बाद छह जून को उनकी मां की भी मौत हो गई। इन मौतों के कारणों को लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं हो सकी है। यह घटना बताती है कि चीतों को केवल भारत में जन्म देना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन्हें प्राकृतिक परिस्थितियों में सुरक्षित रूप से जीवन जीने और अपनी संतति बढ़ाने में सक्षम बनाना भी उतना ही जरूरी है।

कूनो परियोजना के शुरुआती वर्षों में नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका से लाए गए चीतों के अनुकूलन की प्रक्रिया आसान नहीं रही। नामीबिया से आठ चीते लाए गए थे। इसके बाद दक्षिण अफ्रीका से 12 और चीते लाकर बसाए गए। जलवायु परिवर्तन, नई परिस्थितियों और संक्रमण से जुड़े जोखिमों के कारण शुरुआती वर्षों में कुछ चीतों की मृत्यु हुई। दक्षिण अफ्रीका से लाए गए 12 चीतों में मृत्यु दर नामीबिया से आए चीतों की तुलना में कुछ कम रही। इन आंकड़ों ने परियोजना के प्रबंधन और चीतों के अनुकूलन को लेकर आगे की रणनीति बनाने में मदद की।

भारत में चीता पुनर्वास का महत्व इसलिए भी अधिक है क्योंकि यह प्रजाति देश से पूरी तरह विलुप्त हो चुकी थी। कभी भारतीय जंगलों में चीते की रफ्तार उसकी पहचान हुआ करती थी। 1947 के आसपास भारत में चीता विलुप्ति की कगार पर पहुंच चुका था। 1948 में छत्तीसगढ़ के सरगुजा क्षेत्र में अंतिम चीते के देखे जाने का उल्लेख मिलता है। इसके बाद भारतीय जंगलों से चीता पूरी तरह गायब हो गया। संरक्षण के प्रयास व्यवस्थित रूप से शुरू होने से पहले ही आखेट और आवासीय परिस्थितियों में बदलाव ने इस प्रजाति को समाप्त कर दिया।

चीता केवल तेज दौड़ने वाला वन्यजीव नहीं है, बल्कि अपनी विशिष्ट शारीरिक संरचना और फुर्ती के कारण प्रकृति की अद्भुत रचना माना जाता है। यह धरती पर सबसे तेज दौड़ने वाले स्थलीय जीवों में शामिल है। कभी भारत सहित एशिया के बड़े हिस्से में इसकी मौजूदगी थी। अफ्रीका में भी इसकी संख्या लगातार घटती गई। आवास का सिकुड़ना, शिकार, भोजन की कमी और अन्य प्राकृतिक चुनौतियों ने इसकी संख्या को प्रभावित किया। एशिया में अब चीते का अस्तित्व मुख्य रूप से ईरान तक सीमित रह गया है। ऐसे समय में भारत में चीते की वापसी और यहां उनका प्रजनन वैश्विक स्तर पर वन्यजीव संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण घटना है।

चीतों के संरक्षण में वैज्ञानिक प्रयासों के बावजूद प्रजनन हमेशा आसान नहीं रहा। चिड़ियाघरों में भी इनके प्रजनन को लेकर कई कठिनाइयां सामने आईं। बीती सदी के मध्य में अमरीका के चिड़ियाघरों में चीतों ने शावकों को जन्म दिया, लेकिन उन्हें बचाया नहीं जा सका। इसका एक कारण यह माना जाता रहा कि जंगल के वन्यजीव नियंत्रित वातावरण में प्राकृतिक व्यवहार पूरी तरह नहीं कर पाते। यही वजह है कि आज संरक्षण की दिशा में केवल संख्या बढ़ाने के बजाय प्राकृतिक आवास में प्रजनन और स्वावलंबी आबादी तैयार करना महत्वपूर्ण लक्ष्य बन गया है।

भारत में चीतों का इतिहास राजसी आखेट से भी जुड़ा रहा है। पुराने समय में राजा-महाराजा घोड़ों और कुत्तों की तरह चीतों को भी पालते और प्रशिक्षित करते थे। चीता शावकों को मनुष्यों द्वारा पाला जाता था और उन्हें शिकार के लिए प्रशिक्षित किया जाता था। आखेट के दौरान प्रशिक्षित चीतों को साथ ले जाया जाता और शिकार दिखाई देने पर उन्हें छोड़ दिया जाता था। अपनी असाधारण गति के कारण चीता पलक झपकते ही शिकार तक पहुंच जाता था। उस समय यह राजसी शिकार का रोमांच था, लेकिन आज परिस्थितियां पूरी तरह बदल चुकी हैं। अब चीते को बचाना और उसकी प्राकृतिक आबादी बढ़ाना हमारी जिम्मेदारी है। कूनो के बाद मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले स्थित गांधीसागर अभयारण्य में भी चीतों को बसाया गया है। यहां भी भविष्य में इनके प्रजनन की उम्मीद की जा रही है। यदि कूनो और गांधीसागर दोनों क्षेत्रों में चीते प्राकृतिक रूप से प्रजनन कर अपनी आबादी बढ़ाने में सफल होते हैं तो भारत में इनके लिए एक से अधिक सुरक्षित आवास तैयार हो सकेंगे। इससे किसी एक क्षेत्र पर संरक्षण का दबाव भी कम होगा।

ब्रिक्स से भारत को क्या लाभ

दिनांक 12 एवं 13 सितम्बर 2026 को ब्रिक्स का 18वां शिखर सम्मेलन दिल्ली के भारत मंडपम में सफलता पूर्वक सम्पन्न हो गया। ब्रिक्स का उद्देश्य सदस्य देशों के बीच आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक सहयोग बढ़ाना है। इस शिखर सम्मेलन में ब्रिक्स के 11 सदस्य देशों के साथ ही 10 अन्य देशों के राष्ट्राध्यक्ष, प्रधानमंत्री एवं उच्च स्तर के अधिकारी शामिल हुए। वर्ष 2025-26 के लिए भारत को ब्रिक्स का अध्यक्ष बनाया गया था, अतः भारत ने इस वर्ष ब्रिक्स सम्मेलन की मेजबानी एवं अध्यक्षता की। ब्रिक्स के माध्यम से विश्व की 11 प्रमुख उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं एवं विकासशील देशों को एक मंच प्रदान किया जाता है। ब्रिक्स में शामिल देशों की कुल आबादी विश्व की कुल जनसंख्या का 49.5 प्रतिशत है और विश्व के कुल सकल घरेलू उत्पाद में 40 प्रतिशत की हिस्सेदारी है तथा वैश्विक व्यापार में 26 प्रतिशत की भागीदारी है। इससे वैश्विक स्तर पर ब्रिक्स का महत्व स्वयं ही स्पष्ट हो जाता है। ब्रिक्स के सदस्य देश आपस में आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा, अंतरराष्ट्रीय आर्थिक और वित्तीय स्थिति, दूरसंचार, कृषि, श्रम, रोजगार, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संरचना, व्यापार और विश्व व्यापार संगठन सहित वैश्विक मुद्दों पर विचार विमर्श करते है। इस वर्ष के ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की थीम ÷लचीलापन, नवाचार, सहयोग और स्थिरता के लिए निर्माण÷ रखी गई थी। शिखर सम्मेलन में 45 पन्नों एवं 140 बिंदुओं के ÷नई दिल्ली घोषणापत्र÷ को समस्त सदस्य देशों द्वारा सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया था। इस सम्मेलन की यह सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है, क्योंकि इस सम्मेलन में आपस में कुछ विरोधाभासी विचार रखने वाले देश (ईरान, साऊदी अरब एवं संयुक्त अरब अमीरात) भी शामिल थे। ईरान के राष्टपति एवं यूएई के राष्टपति के बीच शिखर सम्मेलन के बीच आपस में वार्ता सम्पन्न हुई थी, जबकि दोनों देशों के बीच अमेरिका-ईरान युद्ध के संदर्भ में तनाव की स्थिति कायम है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि ब्रिक्स की स्थापना अमेरिका में हुई है। वर्ष 2006 में न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट महासभा (यूएनजीए) के मौके पर ब्रिक विदेश मंत्रियों की पहली बैठक में ब्रिक को औपचारिक रूप दिया गया था। ब्रिक का पहिला उद्घाटन शिखर सम्मेलन वर्ष 2009 में रूस के येकातेरिनबर्ग में आयोजित किया गया था। वर्ष 2010 में न्यूयॉर्क में ब्रिक विदेश मंत्रियों की बैठक में दक्षिण अफ्रीका को शामिल करने के साथ ब्रिक को ब्रिक्स में विस्तारित करने पर सहमति हुई थी। तदनुसार, दक्षिण अफ्रीका ने 2011 में सान्या में तीसरे ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भाग लिया। मिस्त्र, इथियोपिया, ईरान, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात जनवरी 2024 से और इंडोनेशिया जनवरी 2025 में ब्रिकस के पूर्ण सदस्य बने। इसके बाद बेलारूस, बोलीविया, कजाकिस्तान, क्यूबा, मलेशिया, नाइजीरिया, थाईलैंड, युगांडा, उज्बेकिस्तान और वियतनाम 2025 में भागीदार देशों के रूप में ब्रिक्स में शामिल हुए। भारत के प्रधानमंत्री ने अपने उदबोधन में उक्त ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में कई आवश्यक एवं महत्वपूर्ण विषयों की ओर समस्त सदस्यों का ध्यान आकर्षित किया है। अमेरिका के राष्टपति डॉनल्ड ट्रम्प ने विभिन्न देशों से अमेरिका को होने वाले कई उत्पादों के निर्यात पर भारी भरकम टैरिफ लगाया था।, इसी प्रकार चीन ने भी आवश्यक मिनरल के निर्यात पर कुछ प्रतिबंध लगाए थे, इस प्रकार की स्थित पुनः न बनें इस हेतु यह सुझाव दिया गया है कि तकनीकी एवं आवश्यक मिनेरल्स को विभिन्न देशों द्वारा हथियार की तरह इस्तेमाल नहीं करना चाहिए इसका सीधा सीधा विपरीत प्रभाव विकासशील देशों के विकास पर पड़ता है।

20 sep 2026 WEEKLY.qxd 9/19/2026 6:13 PM Page 5

आशीष के बाद भाजपा के मीडिया अखाड़े में अगला पहलवान कौन?

भोपाल के तीन नामों की चर्चा, मुख्यमंत्री की पसंद उज्जैनज लेकिन प्रदेश का मीडिया किसी के लिए आसान अखाड़ा नहीं

राजेंद्र सिंह जादौन

सर्च स्टोरी 7 भोपाल मध्यप्रदेश भाजपा के मीडिया अखाड़े में एक बार फिर हलचल तेज है। अच्छे-अच्छे पहलवान आए और चले गए, लेकिन प्रदेश के मीडिया को जितना आशीष अग्रवाल ने साधा, उतना शायद ही कोई दूसरा मीडिया प्रभारी कर पाया। यही वजह है कि आशीष के बाद भाजपा के सामने सबसे बड़ा सवाल सिर्फ यह नहीं है कि अगला मीडिया प्रभारी कौन होगा, बल्कि असली सवाल यह है कि कौन उस कुर्सी का वजन उठा पाएगा?

राजनीति में मीडिया प्रभारी की कुर्सी बाहर से जितनी आसान दिखाई देती है, अंदर से उतनी ही कठिन है। यहां रोज सरकार की उपलब्धियां बतानी पड़ती हैं, पार्टी के फैसलों का बचाव करना पड़ता है, विपक्ष के हमलों का जवाब देना पड़ता है और साथ ही उन पत्रकारों से भी संवाद बनाए रखना पड़ता है जो रोज सरकार और संगठन से सवाल करते हैं। यानी यह नौकरी ऐसी है जिसमें दोस्त भी चाहिए और विरोधी से भी बातचीत की कला आनी चाहिए।

आशीष अग्रवाल के दौर ने इस पद को प्रदेश भाजपा में एक अलग पहचान दी। मीडिया से लगातार संवाद, पत्रकारों तक पहुंच और संगठन की बात को मीडिया तक पहुंचाने की उनकी शैली ने उन्हें दूसरे मीडिया प्रभारियों से अलग खड़ा किया। अच्छे-अच्छे राजनीतिक पहलवान आए, कुछ ने खूब दांव-पेंच दिखाए, लेकिन प्रदेश की मीडिया को लंबे समय तक साधकर रखना हर किसी के बस की बात नहीं रही।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही कि पहली बार मध्यप्रदेश भाजपा के किसी मीडिया प्रभारी को भाजपा की केंद्रीय समिति में जगह मिलने की चर्चा ने इस पद की अहमियत को और बढ़ा दिया। यानी मामला अब सिर्फ भोपाल की मीडिया तक सीमित नहीं है। प्रदेश का मीडिया प्रभारी ऐसा व्यक्ति भी हो सकता है जिसकी राजनीतिक भूमिका आगे चलकर प्रदेश से बाहर तक दिखाई दे। इसीलिए अब भाजपा के भीतर अगली नियुक्ति को लेकर चर्चाएं तेज हैं।

सूत्रों की मानें तो इस बार राजधानी भोपाल को लेकर एक नई संभावना सामने आई है। चर्चा है कि प्रदेश भाजपा को पहली बार भोपाल का ही मीडिया प्रभारी मिल सकता है। इसके लिए केंद्रीय स्तर पर जिन नामों की चर्चा बताई जा रही है, उनमें आलोक शर्मा, राजेन्द्र गुप्ता और नवोत्तम मिश्रा प्रमुख बताए जा रहे हैं।

तीनों नाम अपने आप में अलग-अलग राजनीतिक समीकरण रखते हैं। आलोक शर्मा राजधानी भोपाल की राजनीति और संगठन के बीच लंबे समय से सक्रिय रहे हैं। राजधानी के पत्रकारों, राजनीतिक गलियारों और संगठन के भीतर उनकी पहचान किसी परिचय की मोहताज नहीं है। अगर भाजपा स्थानीय चेहरे को आगे बढ़ाने का फैसला करती है तो आलोक शर्मा का नाम स्वाभाविक रूप से मजबूत दावेदारों में दिखाई देता है।

राजेन्द्र गुप्ता का नाम भी इसी दौड़ में चर्चा में है। संगठन और मीडिया के बीच संवाद का अनुभव रखने वाले चेहरे के रूप में उनका नाम सामने आ रहा है। मीडिया प्रभारी के लिए यह अनुभव इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि पार्टी की भाषा को पत्रकार की भाषा में और पत्रकार के सवाल को पार्टी की मेज तक पहुंचाने का काम आसान नहीं होता।

तीसरा नाम नवोत्तम मिश्रा का है और इस नाम के साथ मीडिया

मैनेजमेंट की चर्चा अपने आप तेज हो जाती है। लंबे राजनीतिक अनुभव के कारण वे मीडिया के सवालों, राजनीतिक विवादों और विपक्ष के हमलों से निपटने की कला से परिचित हैं। कैमरे के सामने खड़े होकर जवाब देना और कैमरे के पीछे पत्रकारों के सवालों को समझना दोनों अलग-अलग हुनर हैं, लेकिन राजनीति में लंबे समय तक सक्रिय रहने वाले नवोत्तम मिश्रा इन दोनों परिस्थितियों से गुजर चुके हैं। लेकिन इन तीन नामों के बीच एक चौथा समीकरण भी है और वह है मुख्यमंत्री मोहन यादव की पसंद।

राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि मुख्यमंत्री अपना मीडिया मैनेजमेंट प्रदेश भाजपा संगठन में अपनी राजनीतिक सोच और टीम के अनुरूप रखना चाहते हैं। उनकी इच्छा प्रदेश की राजनीति और सरकार के बीच बेहतर तालमेल वाले चेहरे को लेकर बताई जा रही है। ऐसे में उज्जैन का कनेक्शन भी इस पूरे मामले में महत्वपूर्ण हो जाता है।

आखिर मोहन यादव की राजनीति की सबसे मजबूत पहचान उज्जैन से ही निकलती है। मुख्यमंत्री बनने के बाद भी उज्जैन उनके राजनीतिक केंद्र में बना हुआ है। ऐसे में यदि मुख्यमंत्री चाहते हैं कि मीडिया की कमान उनके भरोसेमंद और उज्जैन से जुड़े किसी व्यक्ति के हाथ में हो तो इसे भी राजनीतिक रूप से अस्वाभाविक नहीं माना जा सकता। लेकिन भाजपा के सामने असली परीक्षा यहीं से शुरू होती है। क्या मीडिया प्रभारी मुख्यमंत्री की पसंद से तय होगा या संगठन की जरूरत से? क्या पार्टी ऐसा व्यक्ति चुनेगी जो मुख्यमंत्री के करीब हो या ऐसा व्यक्ति जो पूरे प्रदेश के पत्रकारों के बीच अपनी जगह बना सके?

और सबसे बड़ा सवाल यह कि क्या पार्टी मीडिया को केवल मैनेज करने वाला व्यक्ति चाहती है या ऐसा चेहरा जो संकट के समय सरकार और संगठन के सामने ढाल बनकर खड़ा हो सके? क्योंकि मध्यप्रदेश की मीडिया को मैनेज करना इतना आसान नहीं है।

यहां कई सरकारें आईं, कई मीडिया प्रभारी आए और कई रणनीतियां बनीं। किसी ने विज्ञापन को हथियार बनाया, किसी ने सत्ता की ताकत को, किसी ने नेताओं के फोन को और किसी ने पत्रकारों से दूरी बनाकर यह समझ लिया कि खबरें अपने आप ठीक हो जाएंगी। लेकिन अंत में वही लोग टिक पाए जिनके पास संवाद की ताकत थी।

आज का मीडिया पहले से कहीं ज्यादा बदल चुका है। अखबार के साथ न्यूज पोर्टल है, न्यूज चैनल है, यूट्यूब है, फेसबुक है, एक्स है और हर पत्रकार के हाथ में मोबाइल कैमरा है। कोई खबर सुबह भोपाल में शुरू होती है तो दोपहर तक दिल्ली पहुंच सकती है और शाम तक पार्टी के केंद्रीय कार्यालय में उसकी चर्चा हो सकती है।

ऐसे समय में मीडिया प्रभारी के लिए सबसे जरूरी गुण यह नहीं कि वह कितनी प्रेस विज्ञप्तियां जारी कर सकता है। जरूरी यह है कि जब सरकार मुश्किल में हो तब वह पत्रकार का फोन उठाता है या नहीं।

क्योंकि मीडिया मैनेजमेंट का असली टेस्ट सरकार की तारीफ वाली खबर में नहीं होता। असली परीक्षा उस दिन होती है जब कोई मंत्री विवाद में हो, कोई सरकारी फैसला सवालों में हो, विपक्ष आक्रामक हो और पत्रकार लगातार जवाब मांग रहे हों। उस समय फोन बंद करने वाला मीडिया प्रभारी नहीं, फोन उठाकर जवाब देने वाला मीडिया प्रभारी संगठन के काम आता है। और यही वह जगह है जहां आशीष अग्रवाल की तुलना आगे आने वाले व्यक्ति से होना तय है। क्योंकि उन्होंने एक ऐसा पैमाना छोड़ दिया है जिसके बाद आने वाले मीडिया प्रभारी को सिर्फ पद नहीं मिलेगा, तुलना भी मिलेगी। पत्रकार यह देखेंगे कि नया चेहरा कितनी आसानी से उपलब्ध है, कितनी सहजता से सवाल सुनता है और कितनी मजबूती से पार्टी का पक्ष रखता है।

भाजपा के लिए यह नियुक्ति इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रदेश में 2028 के विधानसभा चुनाव की तैयारी धीरे-धीरे राजनीतिक रूप से दिखाई देने लगेगी। आने वाले समय में सरकार की योजनाओं, उपलब्धियों और विवादों को लेकर मीडिया की भूमिका और बढ़ेगी। ऐसे में मीडिया प्रभारी सिर्फ प्रेस कॉन्फ्रेंस करवाने वाला व्यक्ति नहीं होगा, बल्कि सरकार और मीडिया के बीच सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक पुल होगा। आलोक शर्मा, राजेन्द्र गुप्ता और नवोत्तम मिश्रा में से कौन यह जिम्मेदारी संभालेगा, यह फिलहाल चर्चा का विषय है। मुख्यमंत्री की पसंद का समीकरण अलग है, प्रदेश संगठन की जरूरत अलग है और केंद्रीय नेतृत्व की अपनी रणनीति होगी। तीनों समीकरण एक जगह बैठेंगे तभी नाम तय होगा।

लेकिन एक बात साफ है कि भाजपा को इस बार सिर्फ मीडिया प्रभारी नहीं चाहिए। उसे ऐसा खिलाड़ी चाहिए जो पत्रकारों को दुश्मन न समझे, आलोचना से घबराए नहीं, विपक्ष के सवालों से भागे नहीं और सरकार के कठिन समय में भी मीडिया के सामने खड़ा रह सके।

क्योंकि प्रदेश भाजपा का मीडिया अखाड़ा कोई आसान अखाड़ा नहीं है। यहां अच्छे-अच्छे पहलवानों ने एंट्री ली है, दांव भी लगाए हैं और कई बार तालियां भी बटोरी हैं। लेकिन समय के साथ कई पहलवान अखाड़े से बाहर हो गए। अब आशीष के बाद फिर कुश्ती शुरू है। भोपाल के तीन नाम चर्चा में हैं, मुख्यमंत्री की पसंद में उज्जैन का रंग दिखाई दे रहा है और दिल्ली की निगाहें अपने समीकरण देख रही हैं। कुर्सी एक है, दावेदार कई हैं। लेकिन फैसला किसी एक नाम पर होगा। और उसके बाद असली मुकाबला शुरू होगा। क्योंकि भाजपा चाहे जिसे मीडिया प्रभारी बनाए, अगला सवाल मीडिया का होगा आशीष के बाद कौन? और इसका जवाब नियुक्ति से नहीं, आने वाले दिनों में पत्रकारों के फोन उठाने की उसकी क्षमता से मिलेगा। मध्यप्रदेश भाजपा को ऐसा मीडिया प्रभारी चाहिए जो दुश्मनों को भी दोस्त बना ले और दोस्तों को भी सवाल पूछने की आजादी दे। क्योंकि मीडिया को चुप कराना मैनेजमेंट नहीं, मीडिया को साथ लेकर चलना ही असली मैनेजमेंट है।

शहरी परिवहन को स्मार्ट और सुविधाजनक बनाने की दिशा में मध्य प्रदेश सरकार के साथ रैपिडो की साझेदारी

इंदौर, जीएनएस।

भारत के प्रमुख और किफायती वन-स्टॉप मोबिलिटी प्लेटफॉर्म रैपिडो (Rapido) संचालित करने वाली कंपनी रोपेन ट्रांसपोर्टेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड ने मध्य प्रदेश परिवहन विभाग के अधीन मध्य प्रदेश यात्री परिवहन एवं अधोसंरचना लिमिटेड (MPYPIL) के साथ एक समझौता ज्ञापन (स्ब्श) पर हस्ताक्षर किए हैं।

इस साझेदारी का उद्देश्य प्रदेश के शहरी केंद्रों और छोटे शहरों में सार्वजनिक परिवहन की पहुंच को मजबूत करना, यात्रियों के लिए फर्स्ट एवं लास्ट-माइल कनेक्टिविटी बेहतर करना तथा तकनीक के माध्यम से दैनिक आवागमन को अधिक सुविधाजनक और सुगम बनाना है। इस पहल में रैपिडो के बाइक-टैक्सी नेटवर्क का उपयोग किया जाएगा।

यह स्ब्श इंदौर स्थित ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में आयोजित 'यात्री परिवहन विजन समिट 2026' के दौरान घोषित किया गया। कार्यक्रम में मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, परिवहन एवं स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह, परिवहन विभाग के प्रमुख सचिव श्री मनीष सिंह, द्धृस्, विभाग के वरिष्ठ अधिकारी तथा रैपिडो के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

प्रमुख परिवहन केंद्रों की जानकारी रैपिडो ऐप पर

समझौते के तहत रैपिडो, MPYPIL के साथ मिलकर सार्वजनिक परिवहन को तकनीक से जोड़ने वाली व्यवस्था विकसित करने में सहयोग करेगा। इसके अंतर्गत प्रदेश के प्रमुख सार्वजनिक परिवहन केंद्रों, जैसे मेट्रो स्टेशन, बस स्टॉप और बस स्टैंड आदि के लोकेशन को रैपिडो ऐप पर उपलब्ध कराने की दिशा में काम किया जाएगा।

इससे यात्रियों को अपने आसपास उपलब्ध सार्वजनिक परिवहन केंद्रों की जानकारी आसानी से मिल सकेगी और रैपिडो की दोपहिया टैक्सी सेवा के माध्यम से इन केंद्रों तक पहुंचने तथा वहां से आगे की यात्रा करने के लिए फर्स्ट एवं लास्ट-माइल कनेक्टिविटी उपलब्ध हो सकेगी।

साझेदारी में समावेशी मोबिलिटी को भी प्राथमिकता दी गई है। इसके तहत रैपिडो की 'पिंक' पहल के माध्यम से महिलाओं द्वारा महिलाओं के लिए बाइक-टैक्सी सेवाओं को प्रोत्साहित करने की संभावनाओं पर भी काम किया जाएगा।

सार्वजनिक परिवहन को अधिक नागरिक-केंद्रित बनाने पर जोर

मध्य प्रदेश यात्री परिवहन एवं अधोसंरचना लिमिटेड (स्क्क्ष्क्ष्रु) तथा परिवहन विभाग, मध्य प्रदेश शासन की ओर से कहा गया,

÷मध्य प्रदेश के शहरों के विस्तार के साथ सार्वजनिक परिवहन को मजबूत करना और यात्रियों के लिए बेहतर लास्ट-माइल कनेक्टिविटी उपलब्ध कराना हमारी महत्वपूर्ण प्राथमिकताओं में शामिल है। रैपिडो के साथ यह साझेदारी तकनीक और सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से नागरिकों की दैनिक यात्रा को अधिक सुविधाजनक, सुलभ और बेहतर तरीके से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। सार्वजनिक बस एवं मेट्रो नेटवर्क की जानकारी को तकनीक के माध्यम से उपलब्ध कराने और 'महिलाओं द्वारा महिलाओं के लिए' बाइक-टैक्सी जैसी समावेशी मोबिलिटी पहलों को बढ़ावा देकर हम प्रदेश में अधिक नागरिक-केंद्रित शहरी परिवहन व्यवस्था विकसित करना चाहते हैं।

सार्वजनिक परिवहन की पहुंच को बढ़ाएगी बाइक-टैक्सी

रैपिडो के चीफ मार्केटिंग ऑफिसर पवनदीप सिंह ने कहा,

÷मध्य प्रदेश रैपिडो के लिए एक महत्वपूर्ण राज्य है और हमें स्क्क्ष्क्ष्रु तथा परिवहन विभाग के साथ मिलकर प्रदेश की शहरी मोबिलिटी विजन को समर्थन देने पर गर्व है। यह समझौता सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था के विस्तार के रूप में बाइक-टैक्सी की भूमिका को रेखांकित करता है। बस और मेट्रो नेटवर्क तक यात्रियों की फर्स्ट एवं लास्ट-माइल पहुंच को बेहतर बनाने में बाइक-टैक्सी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। हम आगे भी विभाग के साथ मिलकर तकनीक आधारित मोबिलिटी समाधानों के माध्यम से मध्य प्रदेश में सार्वजनिक परिवहन को अधिक सुलभ, कनेक्टेड और सुविधाजनक बनाने की दिशा में काम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।÷

भोपाल और इंदौर में होगा तकनीकी एकीकरण का पायलट

यह साझेदारी मध्य प्रदेश सरकार के सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देने, सार्वजनिक-निजी भागीदारी को प्रोत्साहित करने और यात्रियों के अनुभव को बेहतर बनाने के व्यापक प्रयासों के अनुरूप है।

समझौते के तहत रैपिडो यात्रियों को नजदीकी सार्वजनिक परिवहन केंद्रों की पहचान करने में मदद करेगा और उन्हें दोपहिया टैक्सी के माध्यम से इन केंद्रों से जोड़ने की दिशा में सहयोग करेगा।

प्रस्तावित तकनीकी एकीकरण का पायलट चरण आने वाले महीनों में भोपाल और इंदौर में शुरू किए जाने की योजना है। वहीं, मध्य प्रदेश में रैपिडो की फर्स्ट एवं लास्ट-माइल सेवाएं पहले से ही सार्वजनिक परिवहन की पहुंच को पूरक बनाने में भूमिका निभा रही हैं।

महिलाओं के लिए समावेशी मोबिलिटी पर विशेष फोकस

स्ब्श में समावेशी मोबिलिटी को भी प्रमुखता दी गई है। इसके अंतर्गत महिलाओं के नेतृत्व वाली मोबिलिटी सेवाओं को प्रोत्साहित करने और उनके लिए नए अवसर विकसित करने की संभावनाओं पर काम किया जाएगा।

रैपिडो की 'पिंक' पहल के तहत महिलाओं द्वारा महिलाओं के लिए बाइक-टैक्सी सेवा को बढ़ावा देने की योजना है। इस पहल का पायलट इंदौर में शुरू किए जाने की संभावना है, हालांकि इसका क्रियान्वयन आवश्यक परिचालन एवं नियामकीय मंजूरियों के अधीन होगा। इस साझेदारी के माध्यम से रैपिडो, स्क्क्ष्क्ष्रु और मध्य प्रदेश परिवहन विभाग के साथ मिलकर प्रदेश में यात्रियों के लिए अधिक कनेक्टेड, समावेशी, सुलभ और सुविधाजनक परिवहन व्यवस्था विकसित करने की दिशा में सहयोग करेगा।

20 sep 2026 WEEKLY.qxd 9/19/2026 6:13 PM Page 6

करते ही सुमिरन हिंदी का मन छंद-छंद हो जाता है....

-पंडित सुरेश नीरव

हिंदी दिवस की पूर्व संध्या के पावन अवसर पर आज 'पैरामाउंट गोल्फ़ फ़ॉरेस्टे, ग्रेटर नोएडा' में आज साहित्य और पत्रकारिता का एक अद्भुत महाकुंभ आयोजित हुआ। इसमें जहाँ एक ओर अपनी ओजस्वी और रसमयी प्रखर वाणी से मंच को गुंजायमान करने वाले दिग्गज कवि पधारे वहीं दूसरी ओर हिंदी के दो प्रमुख समाचार पत्रों के यशस्वी संपादकों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से इस संध्या को दीप्तिमान किया।

शब्दों की इस भाव यात्रा को देवत्व प्रदान करने हेतु लोकप्रिय कवयित्री मधु मिश्रा ने सरस्वती वंदना कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। साहित्य और पत्रकारिता के अंतर्संबंधों को रेखांकित करते हुए समारोह की अध्यक्षता करते हुए हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार और प्रज्ञान विश्वम् पत्रिका के प्रधान संपादक पंडित सुरेश नीरव ने कहा कि-

साहित्य और पत्रकारिता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, जहाँ साहित्य समाज के शाश्वत सत्य और संवेदनाओं को स्वर देता है, वहीं पत्रकारिता समकालीन यथार्थ और सामाजिक घटनाओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है। पत्रकारिता जहाँ आज के सच को तात्कालिकता के साथ दर्ज करती है, वहीं साहित्य उसी सच को स्थायित्व देकर आने वाली पीढ़ियों के लिए एक दस्तावेज बना देता है। उन्होंने आगे कहा कि देश के स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी और हिंदी पत्रकारिता का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इसी क्रम में प्रतिष्ठित दैनिक समाचारपत्र हिंद आत्मा के संपादक तथा प्रेस क्लब ऑफ इंडिया की कार्यकारिणी सदस्य अशोक कौशिक ने वर्तमान समय में हिंदी पत्रकारिता की चुनौती और उसकी विश्वसनीयता को केंद्र में रखकर कहा कि -आज प्रिंट मीडिया को इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और बढ़ते बाजार के दवाब को झेलते हुए अखबार की विश्वसनीयता को बनाए रखते हुए अखबार निकालना होता है। इस दिशा में होने वाली।कठिनाइयों की जहां उन्होंने विस्तार से चर्चा की तो वहीं इटावा टाइम्स के संपादक अतुल वीएन चतुर्वेदी ने ईमानदार पत्रकारिता में उत्पीड़न और सरकार के कोपभाजन बनने की खतरों का जिक्र करते हुए पत्रकारिता को एक साहसिक कार्य बताया।

इस अवसर पर आयोजन की संयोजक प्रतिष्ठित विज्ञान कवयित्री रचना दीक्षित ने पत्रकारों और आयोजन में सम्मिलित हुए सभी रचनाकारों को शॉल, मौक्तिक माल और संस्था की डायरी प्रदान कर सम्मानित किया।

कार्यक्रम के द्वितीय चरण में कवि सम्मेलन हुआ। जिसमें हिन्दी की वंदना करते हुए प्रतिष्ठित कवि पंडित सुरेश नीरव ने कहा कि -

देवनागरी हिंदी में ही सकल देवता वास करें
मातु शारदे स्वर-व्यंजन में आकर स्वयं प्रकाश भरे
सुमिरन करते ही हिन्दी का
मन छंद-छंद हो जाता है
हिन्दी भारत की भाषा है, उन्नति की ये परिभाषा है।

इसी क्रम में श्री नीरव ने अध्यात्म-विज्ञान पर भी एक कविता सुनाकर श्रोताओं की पर्याप्त प्रशंसा बटोरी।

प्रतिष्ठित कवयित्री रचना दीक्षित ने हिंदी की वर्तमान स्थिति को अपनी कविता में यूं कहा-

मैं सुकुमारी चुनरी ओढ़े
घर के भीतर कैद रही हूँ
आज मिला है अवसर मुझको
मैं मुँह अपना खोल रही हूँ।
मैं हिंदी बोल रही हूं।

कवि सम्मेलन को आगे बढ़ाते हुए श्रीमती मधु मिश्रा जी ने हिंदी के प्रोत्साहन के नाम पर हो रहे पाखंड पर व्यंग्य कसते हुए कहा कि -

हिन्दी दिवस पर माननीय ने हिंदी की उड़ाते हुए चिंदी
जोर देकर कहा-
वी शुड इनकरेज हिंदी।

सहारनपुर से आए प्रतिष्ठित कवि विनोद भृंग ने माँ की ममता का बखान करते हुए कहा कहा कि -

हमारी माँ हमारी ज़िंदगी का सार होती है ।
वो जीवनदायिनी गंगा की पावन धार होती है ।

इस अवसर पर विजय प्रशांत, डॉ भगवत प्रसाद शर्मा और डॉ रवीन्द्र दीक्षित ने भी अपनी सरस कविताएं सुनाकर कवि सम्मेलन को रोचक बनाया।

अनेक प्रवासी साहित्यकार भी जुड़े.

इस कवि सम्मेलन का अविरल लाइव प्रसारण भी किया गया जिसमें अनेक प्रवासी साहित्यकार जुड़े जिनमें सर्वश्री अमेरिका से सुभाष चन्द्र लखेड़ा/ अन्नदा पाटनी/ डॉ कौशलेंद्र टिंगी/ स्विट्जरलैंड से शाश्वती दीक्षित/ जर्मनी से डॉ. शिप्रा शिल्पी/ कुवैत से संगीता चौबे %पंखुड़ी% और सऊदी अरब से मशहूर शायर अनीस अहमद सहित सभी आरंभ से अंत तक जुड़े रहे।

*****

इसके अतिरिक्त भारत के विभिन्न शहरों से भी अनेक साहित्यकार जुड़े जिनमें - सता जोशी/ दर्शन बेज़ार/ डॉ रूपचन्द्र शास्त्री मयंक/ बोधिसत्व कस्तूरिया/ विमल बहुगुणा/ ?पुष्पा शर्मा / डॉ श्रद्धानंद शर्मा/ अरुण कुमार पासवान/ गिरिजा कुलश्रेष्ठ /ऋषि सिन्हा / अंशु गुप्ता / दीप शिखरवाल / डॉ. अमरेन्द्र कुमार वर्मा / विनीता चतुर्वेदी / सुरेखा पृथी खुराना / सेठ सोहन लाल खण्डेलवाल / शरद गुप्ता/कन्हैया लाल भ्रमर/ प्रकाश चन्द्र गुप्ता / उमेश चंद गैरोला / पूर्णिमा सांघी/ डॉ. अजित वर्मा / सुनीता माहेश्वरी / सुरेन्द्र कुमार सैनी / सुभाष सैनी / अमीना खातून / अब्बास हैदर/ डॉ. सुनीता चौहान / बोधिसत्व कस्तूरिया / विनय कुमार / सरोजिनी चौधरी / आर. के. शर्मा / डॉ.प्रवीण शर्मा / राजपाल यादव %राज% / उमा गुप्ता / महेश अष्ठाना %मधुर% / प्रमिला शरद व्यास / सुनीता चौहान / प्रतीक्षा तिवारी / आर. एन. सिंह / के. पी. चौहान / भूदत्त शर्मा / अलका शर्मा / उमानाथ त्रिपाठी / गीता रस्तोगी / दिनेश दवे / बृजेश सिन्हा / दीप शिखा त्यागी / डॉ .प्रेमलता नीलम / मंजु श्रीवास्तव / सुमन सैनी /डॉ.राधा बिष्ट / सोम प्रभा शर्मा / उमा गुप्ता / अंजू गुप्ता / प्रतिभा शर्मा / अंशु जैन/चंदा प्रहलादका / आलोक कुमार यादव / पूनम भू/ पूनम मल्होत्रा/ डॉ मंजु गुप्ता / सुनीति रावत / डी. एन. झा / शरद गुप्ता / मृत्युंजय श्रीवास्तव / अंशु जैन / दया सिन्हा/ब्रजेश शर्मा/प्रकाश चंद गुप्ता/यशपाल सिंह %यश% / मृत्युंजय कुमार श्रीवास्तव/गौरव प्रशांत/डॉ. मनोरमा शर्मा/ नीलम पाठक/ राजश्री बिष्ट/सुधा देवी/ अजय शर्मा तथा बबीता प्रसाद प्राची सहित आदि अनेक साहित्यकारों ने उपस्थित होकर प्रारंभ से लेकर अंत तक आयोजन में अपनी रचनात्मक भागीदारी बनाए रखी। निश्चित ही साहित्य जगत में इस कवि सम्मेलन को बहुत समय तक याद रखा जाएगा।

हमारे भीतर जो जुनून है, उसे बनाए रखनाः सुश्री सरोज कंसारी

हर इंसान के अंदर कुछ पाने की इच्छाएं होती हैं। अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में संघर्षरत मनुष्य पाने की चाह में कई प्रयास करते हैं। हर इंसान में भावनाएं हैं, जीवन के प्रति उत्साह है, एक इंतजार है अच्छे जीवन जीने का। अपने जीवन में आगे बढ़ना चाहते हैं और अपने सपनों को पूर्ण करने की कोशिश करते हैं। सामान्य से उत्कृष्ट बनने की राह आसान नहीं होती। लगन, मेहनत और साधना पूर्ण जीवन की जरूरत हर पग पर होती है। कुछ श्रेष्ठता को पाने का आधार अपने कार्य के प्रति जुनून है। आप जो भी पाना चाहते हैं उसके लिए भीतर जुनून होना चाहिए। आरंभ से अंत तक अपने जुनून को जागृत रखना जरूरी है। पूरे जुनून के साथ जब हम किसी कार्य की शुरुआत करते हैं तो हमारी शारीरिक-मानसिक क्षमताएं पहले से अधिक सक्रिय, सहयोगी और मार्गदर्शक होती हैं। कई बार हम जोश में कोई कदम उठा तो लेते हैं लेकिन जीवन में मिलने वाली समस्याओं को देखकर पीछे हट जाते हैं। हालात से हार न मानकर हर परिस्थिति में अपने जुनून को बनाए रखना सफलता का आधार है। जुनून एक साधारण इंसान को महान बनाने का माध्यम है। लोगों की नकारात्मक बातों से विचलित न होकर कार्य करते रहने से सफलता अवश्य मिलती है।

जुनून होना ही पर्याप्त नहीं होता, उसे अंत तक बनाए रखना जरूरी है। लोग कई तरह की बातें करेंगे, किसी की भी बातों से या मुसीबत से घबराकर अपने जुनून को शांत मत होने दीजिए। जो सपने हैं, उसे जीने के लिए जुनून जरूरी है। अपनी चाहत को हर पल जीवित रखिए। जुनून ऐसा कि, दिल-दिमाग में बस उसे पूर्ण करने की प्रतिज्ञा हो। मन किसी हालात में भटके नहीं। बुरे हालात से लड़ने और सहने की हिम्मत रखिए। दुनिया में हर तरह के लोग हैं, उसे समझकर संभलकर कार्य कीजिए। जीत के लिए जुनून जरूरी है। जो आपके भीतर जुनून बनाए रखें, ऐसे लोगों के सानिध्य में रहिए। जुनून से जिंदगी में जिज्ञासा बनी रहती है, एक उम्मीद बंधी होती है, एक इंतजार होता है जो हमें जीने के लिए प्रेरित करता है।

कविता-

निरंतर चलते रहना,
बढ़ते रहना कर्म-पथ पर,
और जीवित रखना अपने भीतर
उस जुनून और ललक की आग को।
तुम्हारे भीतर सुलगता यह जुनून
सदा बना रहे, यही एक प्रयास है।

हमारे भीतर किसी लक्ष्य को पाने और कुछ बड़ा करने की जो गहरी लगन और आंतरिक ऊर्जा है, वह कभी बुझनी नहीं चाहिए और उसे हमेशा जिंदा रखना ही हमारा सबसे बड़ा प्रयास होना चाहिए। यह जीवन एक अंतहीन यात्रा है। इस यात्रा में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अपने भीतर के जुनून को हर हाल में बनाए रखना है। बिना जुनून के जिंदगी निराश हो जाती है। जिसमें जुनून है वो हर पल को जीते हैं। कुछ कर गुजरने की चाह ही आपको आगे बढ़ाती है, मन को उदास कर मत बैठिए। एक दिन सांसें थम ही जाएंगी उससे पहले जीवन का आनंद लीजिए, जो पाना है उसके लिए प्रयास करते रहिए।

जुनून के साथ जीने से मन में अनावश्यक बातों की थकान नहीं होती। जुनून हमें मजबूत, जागरूक और सक्रिय बनाता है। जुनून के साथ कार्य करने से हमें नई ऊर्जा मिलती है। जुनून अपने कार्य के प्रति निष्ठा, समर्पण और त्याग की भावनाएं भरता है, भय दूर होता है, आत्मविश्वास बढ़ता है, मानसिकता स्थिर होती है, जुनून से मानसिक कुंठाओं से मुक्त होते हैं।

वैसे तो हर इंसान की चाहत होती है - अपने जीवन में हर उस चीज को पाना जिसे वो प्रेम करते हैं, जिनमें उनकी खुशी जुड़ी होती है। हर इंसान अपने सपने को पूर्ण करना चाहता है लेकिन कई बार हम सोचते रह जाते हैं और कर नहीं पाते, अधूरी सी ख्वाहिश को लेकर अफसोस करते रहते हैं। मजबूरी भी कभी-कभी हमें सपनों को पूर्ण करने में बाधक होती है। जीवन की समस्याएं कभी कम नहीं होतीं, वह जीवन के हर पग में साथ ही रहती हैं, बस हमें आगे जाने की हिम्मत रखनी है। हम कभी-कभी निराशाओं में डूबकर कोशिश करना ही छोड़ देते हैं। जब लगातार मनुष्य अपने जीवन में संघर्ष करता है और हर बार निराशा ही हाथ लगती है, जैसे छल, षड्यंत्र, धोखा, असफलता, तब व्यक्ति उम्मीद ही छोड़ देता है। अगर आपका उद्देश्य सही है तो जुनून ताकत बन जाता है। जुनून किसी कार्य को करने या कुछ पाने की तीव्र इच्छा है। जिस चीज से आपको बेहद लगाव हो उसे पा लेने की चाहत, उसके लिए कुछ भी कर गुजरने की लालसा जुनून है। किसी भी प्रिय व्यक्ति या कार्य के प्रति दिल की गहराई से अपनत्व का भाव है, जिसके बिना जिंदगी अधूरी महसूस हो, उसे पाने की व्याकुलता ही जुनून है।

जब किसी कार्य को करने या कुछ पाने का जुनून होता है तो व्यक्ति हर तरह की मुश्किलों को पार करने के लिए तैयार हो जाता है। सही कार्य के लिए किए गए जुनून से परिणाम भी बेहतर मिलते हैं लेकिन गलत कार्य के प्रति जुनून हमेशा नुकसानदायक होता है। अपनी पसंद की जिंदगी पाने, मानसिक संतुलन बनाने, व्यक्तित्व के विकास और सामान्य से उत्कृष्ट बनने के लिए मन-मंदिर में जुनून की ज्योति जलाए रखिए।

सुश्री सरोज कंसारी
कवयित्री, लेखिका,
शिक्षिका
रिपोर्टर, उद्घोषिका,
नवापारा-राजिम, रायपुर
(छत्तीसगढ़)

श्रमसाधना
www.shramsadhnanews.com
विविध
ग्वालियर, रविवार 20 सितम्बर 2026

हिंदी मेरी पहचान

हिंदी मेरी अभिव्यक्ति, हिंदी मेरी पहचान,
इसमें है विराजित, मधुर ＂आनंद＂ गान,
हिंदी भाषाओं में प्यारी, हिंदी में बसे हैं प्राण,
शब्दों की अनूठी शक्ति, हिंदी मेरा अभिमान ।
हिंदी भावों की सरिता, संजीवनी सा स्पंदन,
माटी की सौंधी खुशबू , हिंदी से है हिंदुस्तान,
हिंदी भाषा है अनोखी, पुरातत्व एक ज्ञान,
संस्कृत की है बिटिया, आधार प्रकाशमान ।
जीवन की खुशियों का, हिंदी सुंदर दर्पण,
सरल सरस भाषा, हृदय की है मुस्कान,
हिंदी में ममता बसी, भरा है अपनापन,
सुंदर संस्कार जड़ें, है नेह पल्लवन ।
अपनी भाषा का करें, सहर्ष हम वंदन,
मीठी बोली को करें, तन-मन ये अर्पण,
निज भाषा से उन्नति, निज भाषा से मान,
आत्मा की आवाज बनी, हिंदी अपनी है शान ।
हिंदी को सदा ही मिले, अपनों से यश मान,
बोलचाल खुलकर, राष्ट्र का होए उत्थान,
हिंदी पर गर्व करें, राजभाषाओं की प्राण,
हिंदी को दिलाएं आप, राष्ट्र भाषा सम्मान ।
हिंदी को मिलें विश्व में, सदा ही सर्वोच्च स्थान,
सुपथ अग्रसर हो, जीवन का अभियान,
हिंदी सबकी सहेली, छलकाती बड़प्पन,
अनुपम रस धारा, गणतंत्र स्वाभिमान ।

मोनिका डागा 'आनंद', चेन्नई

तिरंगे की बेटियाँ...!

नीला गगन गवाह बना, भारत की बेटियाँ खेलीं,
श्रीलंका के मैदान में, जीत नवद इबारत लिखीं।
शेफाली के बल्ले ने, तूफ़ान मचा दिया मैदान में,
स्मृति की साझेदारी ने, रंग भरे हरेक अरमान में।
बहत्तर रन पर रोक, श्रीलंका का सारा अभिमान,
8वीं बार एशिया कप जीत, बेटियों से बढ़ा मान।
हर चौका एक उम्मीद, विकेट जयकारा बन गया,
नीली जर्सी में भारत का,＂तिरंगा＂ ऊँचा तन गया।
ये जीत सिर्फ़ ट्रॉफी नहीं, मेहनत की पहचान बनी,
देश की हरेक बेटी के मन में, एक नई उड़ान बनी।
सलाम बेटियों को,जो मैदान में इतिहास रचाती हैं,
भारत तिरंगा लहराएँ, करोड़ों धड़कनें मुस्काती हैं।
(संदर्भ - एशिया कप में भारत 8वीं बार चैंपियन।)

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

मौलिख सृजन को ...

बढवा देती है हिंदी,
सही शब्द पर
सही मात्रा का चढ़ावा
मांगती है हिंदी,
सरल सहज रसमय
आज प्रवर्ण है हिंदी,
ही पर टिकी
सुहाग की अमर बिंदी,
पर शर्तें हैं
उच्चारण हो सही,
किसी की बपौती नहीं है हिंदी....।।

रचनाकार व वरिष्ठ शिक्षक - प्रदीप शर्मा

राजनीति ही एकमात्र ऐसा पेशा है जहाँ आप झूठ बोल सकते हैं, धोखा दे सकते हैं, फिर भी सम्मानित बने रह सकते हैं

÷राजनीति ही एकमात्र ऐसा पेशा है जहाँ आप झूठ बोल सकते हैं÷—यह कथन अक्सर लोगों के बीच सुनने को मिलता है। चुनावी रैलियों, टेलीविजन की बहसों और सोशल मीडिया पर नेताओं के वादों एवं बयानों को देखकर कई बार लोगों को ऐसा महसूस होता है कि राजनीति में झूठ बोलना एक सामान्य बात बन गई है। लेकिन क्या वास्तव में राजनीति केवल झूठ का दूसरा नाम है? या फिर कुछ नेताओं के आचरण के कारण ऐसी धारणा बनी है? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए राजनीति की प्रकृति, उसके उद्देश्य और उसके व्यवहारिक पक्ष को समझना आवश्यक है।

राजनीति का मूल उद्देश्य समाज और राष्ट्र का कल्याण करना है। लोकतंत्र में जनता अपने प्रतिनिधियों को इसलिए चुनती है ताकि वे उनकी समस्याओं का समाधान करें, देश के विकास के लिए नीतियाँ बनाएँ और न्यायपूर्ण शासन प्रदान करें। लेकिन जब सत्ता प्राप्त करना ही सर्वोच्च लक्ष्य बन जाता है, तब नैतिकता पीछे छूटने लगती है। ऐसी स्थिति में झूठ, भ्रम, आधे-अधूरे सच और खोखले वादे राजनीति का हिस्सा बन जाते हैं।

चुनाव के समय बड़े-बड़े वादे किए जाते हैं। मुफ्त सुविधाएँ, रोजगार, किसानों की

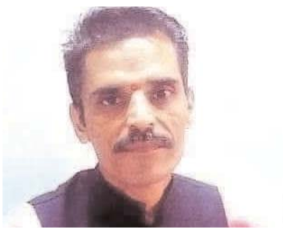

आय दोगुनी करने, भ्रष्टाचार समाप्त करने और महँगाई पर नियंत्रण जैसे अनेक आश्वासन दिए जाते हैं। चुनाव समाप्त होने के बाद इनमें से कई वादे पूरे नहीं हो पाते। परिणामस्वरूप जनता के मन में यह धारणा और मजबूत होती जाती है कि राजनीति में झूठ बोलना मानो स्वीकार्य हो गया है।

उदाहरण 1

यदि कोई नेता चुनाव से पहले हर युवा को नौकरी देने का वादा करे, जबकि उसे स्वयं पता हो कि वर्तमान आर्थिक परिस्थितियों में ऐसा कर पाना संभव नहीं है, तो ऐसा वादा जनता को भ्रमित करने वाला माना जा सकता है। ऐसे उदाहरण अनेक देशों और राज्यों की राजनीति में समय-समय पर देखने को मिलते हैं।

उदाहरण 2

कई बार राजनीतिक दल अपने विरोधियों के विरुद्ध पर्याप्त प्रमाण के बिना आरोप लगाते हैं, ताकि जनता की राय को प्रभावित किया जा सके। बाद में जाँच के दौरान यदि वे आरोप गलत सिद्ध होते हैं, तो इससे राजनीतिक व्यवस्था के प्रति लोगों का विश्वास और कमजोर होता है।

हालाँकि, यह कहना भी उचित नहीं होगा कि राजनीति केवल झूठ का ही पेशा है। इतिहास ऐसे अनेक नेताओं से भरा पड़ा है जिन्होंने सत्य, ईमानदारी और नैतिकता को अपनी राजनीति का आधार बनाया।

उदाहरण 3

महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा को अपनी राजनीति का आधार बनाया। उन्होंने सत्ता प्राप्त करने के लिए झूठ और छल का सहारा लेने के बजाय नैतिक मूल्यों को प्राथमिकता दी। उनका मानना था कि राजनीति को नैतिकता से अलग नहीं किया जा सकता।

उदाहरण 4

लाल बहादुर शास्त्री अपनी ईमानदारी, सादगी और कर्तव्यनिष्ठा के लिए प्रसिद्ध थे। ÷जय जवान, जय किसान÷ केवल एक राजनीतिक नारा नहीं था, बल्कि देश के सैनिक और किसान के प्रति सम्मान तथा जिम्मेदारी की भावना का प्रतीक था।

आज सोशल मीडिया के दौर में झूठ और भ्रामक जानकारी पहले से कहीं अधिक तेजी से फैलती है। कई बार अधूरी, गलत या भ्रामक जानकारी राजनीतिक लाभ के लिए साझा की जाती है। इसलिए नागरिकों की जिम्मेदारी भी बढ़ गई है कि वे किसी भी सूचना पर विश्वास करने से पहले उसकी सत्यता और विश्वसनीयता की जाँच करें। राजनीति में झूठ का सबसे बड़ा नुकसान जनता के विश्वास का टूटना है। जब नागरिकों को बार-बार ऐसा महसूस होता है कि उनके साथ वादों के नाम पर छल किया जा रहा है, तो लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति उनका विश्वास कमजोर हो सकता है। लोगों में व्यवस्था के प्रति निराशा, असंतोष और राजनीतिक उदासीनता बढ़ सकती है।

इसके विपरीत, यदि राजनीति सत्य, पारदर्शिता और जवाबदेही पर आधारित हो, तो लोकतंत्र मजबूत होता है। जनता और सरकार के बीच विश्वास बढ़ता है, विकास कार्य अधिक प्रभावी ढंग से आगे बढ़ सकते हैं और समाज में सकारात्मक वातावरण बनता है।

इसलिए यह कहना कि ÷राजनीति ही एकमात्र ऐसा पेशा है जहाँ आप झूठ बोल सकते हैं÷ पूरी तरह सही नहीं है। झूठ किसी भी क्षेत्र—व्यवसाय, विज्ञापन, खेल, शिक्षा या व्यक्तिगत जीवन—में हो सकता है। अंतर केवल इतना है कि राजनीति में बोले गए झूठ का प्रभाव केवल एक व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि लाखों-करोड़ों लोगों के जीवन, नीतियों और देश की दिशा पर पड़ सकता है। यही कारण है कि राजनीतिक झूठ अधिक गंभीर और अधिक चर्चा का विषय बन जाता है।

निष्कर्ष

राजनीति स्वयं बुरी नहीं है; उसे अच्छा या बुरा बनाने वाले लोग और उनका आचरण होते हैं। यदि राजनीतिक नेतृत्व ईमानदार, जवाबदेह और जनहित के प्रति समर्पित हो, तो राजनीति समाज परिवर्तन का सबसे शक्तिशाली माध्यम बन सकती है।

इसलिए आवश्यकता राजनीति को झूठ का पर्याय मानने की नहीं, बल्कि ऐसी राजनीति को बढ़ावा देने की है जो सत्य, नैतिकता, पारदर्शिता और जनसेवा के सिद्धांतों पर आधारित हो। लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति तभी बनी रहेगी जब नेता अपने वचनों का सम्मान करेंगे और नागरिक भी जागरूक होकर सही प्रतिनिधियों का चुनाव करेंगे।

अंत में कुछ पंक्तियाँ—

वचन केवल शब्दों में नहीं,
आचरण में दिखाई देने चाहिए,
राजनीति में सत्ता नहीं,
संस्कार दिखाई देने चाहिए।
जनता तो विश्वास करके
सौंपती है देश की बागडोर,
हर निर्णय में उस विश्वास का
सम्मान दिखाई देना चाहिए।
क्योंकि लोकतंत्र में कुर्सी
बड़ी नहीं होती,
कुर्सी पर बैठने वाले की
जिम्मेदारी बड़ी होती है।

लेखक चंद्रकांत सी पूजारी क्रांतिकारी पत्रकार संघ गुजरात प्रदेश अध्यक्ष

हड्डियों की उम्र बढ़ने का विज्ञानः क्षरण, तंत्र और पुर्नयौवन

हड्डियों को अक्सर केवल शरीर को सहारा देने वाले ढाँचे के रूप में देखा जाता है, लेकिन वास्तव में वे जीवित और गतिशील ऊतक हैं, जो लगातार स्वयं का नवीनीकरण करते रहते हैं। जीवनभर पुरानी या क्षतिग्रस्त हड्डी को ऑस्टियोक्लास्ट कोशिकाएँ हटाती हैं और नई हड्डी का निर्माण ऑस्टियोब्लास्ट कोशिकाएँ करती हैं। उम्र बढ़ने के साथ यह नाजुक संतुलन धीरे-धीरे प्रभावित होने लगता है। हड्डियों का घनत्व कम होना, उनकी संरचना में गिरावट और मरम्मत की क्षमता में कमी अंततः ऑस्टियोपोरोसिस और फ्रैक्चर के जोखिम को बढ़ा सकती है। आधुनिक शोध के अनुसार हड्डियों की उम्र बढ़ना कोई एकल प्रक्रिया नहीं है, बल्कि आणविक, कोशिकीय, ऊतक और पूरे शरीर के स्तर पर होने वाले अनेक परिवर्तनों का जटिल परिणाम है।

हड्डियाँ कैसे बूढ़ी होती हैं?

हड्डियों की मजबूती बनाए रखने के लिए बोन रीमॉडलिंग अत्यंत आवश्यक है। युवा अवस्था में नई हड्डी के निर्माण और पुरानी हड्डी के टूटने की प्रक्रियाएँ अपेक्षाकृत संतुलित रहती हैं। उम्र बढ़ने पर यह संतुलन हड्डी के अधिक क्षरण और कम निर्माण की दिशा में बदल सकता है।

हड्डी के अंदर मौजूद ट्रैबेक्युलर बोन की सूक्ष्म संरचनाएँ पतली और अधिक अलग-अलग हो सकती हैं, जबकि कॉर्टिकल बोन भी पतली तथा अधिक छिद्रयुक्त हो सकती है। इन संरचनात्मक परिवर्तनों के कारण हड्डियों की यांत्रिक दबाव सहने की क्षमता कम हो सकती है, और यह कमी केवल बोन मिनरल डेंसिटी से समझाई नहीं जा सकती।

कोशिकीय स्तर पर भी कई प्रकार की कोशिकाएँ प्रभावित होती हैं। ऑस्टियोब्लास्ट नई हड्डी बनाने में पहले की तुलना में कम सक्षम हो सकते हैं, जबकि ऑस्टियोक्लास्ट की गतिविधि अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी हो सकती है। हड्डी के भीतर स्थित लंबे समय तक जीवित रहने वाली ऑस्टियोसाइट कोशिकाएँ भी उम्र से संबंधित कार्यात्मक बदलावों का सामना करती हैं। इसी समय, कंकाल की स्टेम और प्रोजेनिटर कोशिकाएँ अपनी पुनर्योजी क्षमता खो सकती हैं और हड्डी बनाने वाली कोशिकाओं के बजाय वसा कोशिकाओं में परिवर्तित होने की प्रवृत्ति बढ़ा सकती हैं।

ऑक्सीडेटिव तनाव और माइटोकॉन्ड्रियल असंतुलन

हड्डियों की उम्र बढ़ने का एक महत्वपूर्ण कारण कोशिकीय तनाव का बढ़ना है। रिएक्टिव ऑक्सीजन स्पीशीज़ की अधिकता डीएनए, प्रोटीन और कोशिका झिल्ली को नुकसान पहुँचा सकती है। हड्डी बनाने वाली कोशिकाओं में अत्यधिक ऑक्सीडेटिव तनाव उनके विकास और खनिजीकरण की प्रक्रिया को प्रभावित कर सकता है तथा कोशिकीय कार्यक्षमता में गिरावट ला सकता है। माइटोकॉन्ड्रिया, जो कोशिकाओं के लिए ऊर्जा उत्पन्न करने वाली संरचनाएँ हैं, उम्र के साथ कम प्रभावी हो सकते हैं। माइटोकॉन्ड्रिया की गुणवत्ता नियंत्रण प्रणाली में गड़बड़ी और क्षतिग्रस्त माइटोकॉन्ड्रिया को हटाने की प्रक्रिया कमजोर होने से ऑक्सीडेटिव तनाव बढ़ सकता है और कोशिकीय वृद्धावस्था, जिसे सेल्युलर सेंसेंसेंस कहा जाता है, को बढ़ावा मिल सकता है। ये परिवर्तन हड्डी के निर्माण और मरम्मत के लिए आवश्यक उच्च ऊर्जा आवश्यकताओं को प्रभावित कर सकते हैं।

कोशिकीय वृद्धावस्था- जब बूढ़ी कोशिकाएँ हानिकारक बन सकती हैं

सेल्युलर सेंसेंसेंस कंकाल की उम्र बढ़ने की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। वृद्ध कोशिकाएँ विभाजित होना बंद कर देती हैं, लेकिन जरूरी नहीं कि वे शरीर से समाप्त हो जाएँ। इसके बजाय इनमें से कई कोशिकाएँ सूजन उत्पन्न करने वाले अणुओं और अन्य पदार्थों को छोड़ती हैं।

इन पदार्थों के समूह को सेनेसेंस-एसोसिएटेड सेक्रेटरी फेनोटाइप , अर्थात कोशिकीय वृद्धावस्था-संबंधी स्रावी स्वरूप कहा जाता है।

उम्र बढ़ती हड्डी के सूक्ष्म वातावरण में ये संकेत सूजन को बढ़ा सकते हैं और आसपास की कोशिकाओं के व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं। शोध से संकेत मिलता है कि वृद्ध कोशिकाएँ ऑस्टियोब्लास्ट के कार्य को कमजोर कर सकती हैं और ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर सकती हैं जो ऑस्टियोक्लास्ट की गतिविधि के अनुकूल हों।

चूहों पर किए गए प्रायोगिक अध्ययनों में वृद्ध कोशिकाओं को हटाने से उम्र से संबंधित हड्डी के क्षरण में कमी देखी गई है। इससे सेल्युलर सेंसेंसेंस भविष्य में संभावित चिकित्सीय लक्ष्य के रूप में सामने आया है।

हालाँकि, इन प्रयोगशाला निष्कर्षों को नियमित मानव उपचार में बदलना अभी चुनौतीपूर्ण है। 2024 में रजोनिवृत्ति के बाद की महिलाओं पर किए गए एक चरण-2 नैदानिक परीक्षण में डासाटिनिब और क्वेरसेटिन के बीच-बीच में दिए जाने वाले संयोजन से हड्डी के क्षरण से संबंधित प्राथमिक परिणाम में महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। यह दर्शाता है कि प्रयोगशाला में आशाजनक दिखाई देने वाली उपचार पद्धतियाँ आवश्यक रूप से प्रभावी मानव उपचार में परिवर्तित नहीं होतीं।

सूजन, हार्मोन और हड्डियों का वातावरण

हड्डियाँ शरीर से अलग होकर उम्रदराज नहीं होतीं। शरीर में होने वाली दीर्घकालिक हल्की सूजन, प्रतिरक्षा कोशिकाओं के व्यवहार में बदलाव और बोन मैरो के वातावरण में परिवर्तन भी हड्डियों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं। उम्र बढ़ने के साथ हार्मोनल परिवर्तन भी होते हैं। उदाहरण के लिए, रजोनिवृत्ति के आसपास एस्ट्रोजन का स्तर कम होने से हड्डियों का क्षरण तेज हो सकता है। पुरुषों में भी उम्र से संबंधित सेक्स हार्मोन में परिवर्तन हड्डियों के रखरखाव को प्रभावित कर सकते हैं। हड्डियों के भीतर मौजूद रक्त वाहिकाएँ और तंत्रिकाएँ भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हड्डी का निर्माण और रक्त वाहिकाओं का विकास एक-दूसरे से घ्घ्श्हृद्द्य4 जुड़े हुए हैं। उम्र के साथ विशेष प्रकार की रक्त वाहिकाओं में होने वाला क्षरण हड्डी बनाने वाली कोशिकाओं को मिलने वाले समर्थन को कम कर सकता है।

20 sep 2026 WEEKLY.qxd 9/19/2026 6:13 PM Page 8

सिस्टम का बोझ और बुजुर्ग की पीठ...!

ज़नाब जूते न गंदे हो जाएं युवा साहब के,
देखों इंसानियत को कीचड़ में बहा दिया।
इस उम्र में उन्हें लाठी का सहारा देना था,
उस उम्र में बुजुर्ग को ही घोड़ा बना दिया।
कुर्सी का नशा आँखों पर इस कदर छाया,
सफ़ेद बालों–झुर्रियों का सम्मान भूल गए।
यह सीधी की माटी गवाह है इस शर्म की,
जहां हाकिम अपनी ही पहचान भूल गए।
वो रीढ़ जो झुक चुकी थी वक्त के थपेड़ों से,
उस पर व्यवस्था का बेदर्द बोझ लाद दिया।
नाले का पानी तो फिर भी साफ़ हो जाएगा,
इस आचरण ने हरेक इंसान को रुला दिया।
सत्ता की हनक में मत भूलो ओ पटवारीजी,
कि यह बुजुर्ग ही हमारे देश की बुनियाद हैं।
जो आज अपनी पीठ पर भी तुम्हें ढो रहे हैं,
हद है बदतमीजी की हम 卐पीढ़ी卐 खो रहें हैं।
(संदर्भ – युवा पटवारी ने 65 वर्षीय बुजुर्ग की पीठ पर बैठ नाला पार किया।)

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

तंत्र सोता रहा...!

जर्जर इमारतें गिरती रहीं, तंत्र सोता रहा,
दीवारों की दरारें खूब चीखती रहीं,
हमेशा शहर खामोश होता रहा।
किसी छत ने पहले ही कहा था–
卐अब मुझमें दम नहीं है,卐
किसी खंभे ने भी काँपकर पूछा था–
卐क्या? मेरा भी कोई गम नहीं है?卐
फाइलों के नीचे दबा, सवाल सोता रहा,
जर्जर इमारतें गिरती रहीं, तंत्र सोता रहा।
हर बारिश में रिसती थी छत,
गर्मी में तपती दीवार, मरम्मत के नाम,
बनता रहा कागजी संसार।
निरीक्षण की मुहर लगती रही,
जिम्मेदारी टलती रही,
जब तक दीवार खड़ी थी,
सबको वह 卐इमारत卐 दिखाई दी,
गिरी तो अचानक सबने कहा–
卐हमें तो पहले से आशंका थी।卐
जर्जर इमारतें गिरती रहीं, तंत्र सोता रहा।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

जब मौत ने कहा-'मैं तो मजाक कर रही थी!'

संजय एम तराणेकर

उस अस्पताल में मृत्यु प्रमाण-पत्र से ज्यादा सांसों की वापसी ने मचाई हलचल। देखा जाये तो अस्पतालों में आमतौर पर मरीज इलाज कराने जाते हैं और डॉक्टर बीमारी का इलाज करते हैं। लेकिन कभी-कभी हालात ऐसे बन जाते हैं कि इलाज से पहले खबरों का इलाज जरूरी हो जाता है।

रीवा के एक अस्पताल की घटना ने तो मानो चिकित्सा विज्ञान और हास्य के बीच की दूरी ही खत्म कर दी। करीब 80 वर्षीय महिला को जांच के बाद मृत घोषित कर दिया गया। परिवार ने मन भारी कर लिया, अस्पताल की प्रक्रिया आगे बढ़ने लगी और मामला लगभग समाप्त मान लिया गया।

लेकिन अगले दिन कहानी में ऐसा ट्विस्ट आया कि मौत भी शायद अपनी डायरी लेकर बैठ गई होगी-÷अरे, मेरा नाम गलत लिख दिया क्या?÷

महिला की सांसें फिर चलती मिलीं। अस्पताल में हड़कंप मच गया। डॉक्टरों ने तत्काल उन्हें दोबारा गंभीर रोगी वार्ड में भर्ती किया और उपचार शुरू कर दिया।

अब सवाल यह नहीं कि सांसें कैसे लौट आई-सवाल यह है कि मौत की घोषणा इतनी जल्दी क्यों कर दी गई?

क्योंकि आजकल हर जगह ÷फास्ट सर्विस÷ का जमाना है। ऑनलाइन खाना जल्दी, मोबाइल रिचार्ज जल्दी, टिकट जल्दी और शायद कुछ जगहों पर मौत की घोषणा भी जल्दी!

मगर चिकित्सा कोई फास्ट-फूड काउंटर नहीं है कि– ÷एक मरीज मृत घोषित कर दीजिए÷

और हाँ, पैक करके परिजनों को दे दीजिए!÷

इस घटना का सबसे बड़ा व्यंग्यात्मक पक्ष यही है कि जिस महिला को कागजों में मृत बता दिया गया था, वह अगले दिन मानो खुद अस्पताल से कह रही हो–

÷भाइयों, कागज बाद में देख लेना, पहले मुझे सांस लेने दो!÷

अस्पताल के दस्तावेजों में मृत्यु दर्ज हो चुकी थी, लेकिन जिंदगी ने दस्तावेजों की परवाह किए बिना अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी। यह स्थिति हमें याद दिलाती है कि कागज पर लिखी गई बात और जमीन पर मौजूद सच्चाई में फर्क होता है।

मृत्यु जैसी गंभीर स्थिति में जांच और चिकित्सकीय मानकों का पालन बेहद जरूरी है। आखिर डॉक्टर के एक निर्णय से किसी परिवार की उम्मीद, भावनाएं और आगे की पूरी प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है।

और अगर कोई मरीज अगले दिन उठकर सांस लेने लगे तो परिवार वाले डॉक्टर से शायद यही पूछेंगे-

÷डॉक्टर साहब, मृत्यु प्रमाण-पत्र वापस ले लें, मरीज ने खुद ही अपना अपील-पत्र दाखिल कर दिया है!

यह घटना हंसने का अवसर जरूर देती है, लेकिन इसके भीतर एक गंभीर संदेश भी छिपा है-चिकित्सा में जल्दबाजी की कोई गुंजाइश नहीं। जिंदगी और मौत के बीच का फैसला पूरी सावधानी, उचित जांच और निर्धारित चिकित्सकीय प्रक्रिया के आधार पर ही होना चाहिए।

वरना कहीं ऐसा न हो कि अगली बार मौत खुद अस्पताल पहुंचकर बोले–

भाई साहब, मुझे बदनाम मत करो

मैं तो अभी इस मरीज को लेने आई ही नहीं थी!

16 अक्टूबर को भारत में लॉन्च होगी नई ऑडी Q3, बड़े आकार और नए फीचर्स से होगी लैस

ऑडी की नई पीढ़ी की त्त3 एसयूवी अब भारतीय बाजार में दस्तक देने के लिए तैयार है। कंपनी नई त्त3 को 16 अक्टूबर 2026 को भारत में लॉन्च करेगी। इस नई लग्जरी एसयूवी के लिए बुकिंग पहले ही शुरू की जा चुकी है और ग्राहक 1 लाख रुपये की टोकन राशि देकर इसे बुक कर सकते हैं। इसकी कीमत की घोषणा लॉन्च के दिन ही की जाएगी। नई त्त3 को कंपनी ने पहले की तुलना में अधिक आधुनिक और दमदार रूप दिया है। इसके बाहरी डिजाइन में बदलाव के साथ इसका आकार भी बढ़ाया गया है। अंदर से भी एसयूवी के केबिन को बड़े स्तर पर अपडेट किया गया है और इसमें तकनीक से जुड़े कई नए फीचर जोड़े गए हैं। भारत में इसे ऑडी की क्वात्रो ऑल-व्हील-ड्राइव प्रणाली के साथ पेश किया जाएगा।

पहले से ज्यादा बड़ी और दमदार दिखेगी नई त्त3

नई त्त3 का डिजाइन पिछली पीढ़ी की तुलना में अधिक सीधा और मजबूत नजर आता है। आगे की तरफ चौड़ी ग्रिल के दोनों ओर दो हिस्सों में विभाजित एलईडी हेडलैंप दिए गए हैं। ऑडी ने इस बार ग्रिल के आसपास मिलने वाली क्रोम सजावट को हटा दिया है। इसके अलावा कंपनी ने अपना द्वि-आयामी लोगो दिया है और नीचे हवा के प्रवेश वाले हिस्से के नीचे सिल्वर स्किड प्लेट भी मिलती है। आकार की बात करें तो नई त्त3 की लंबाई 4,531 मिलीमीटर, चौड़ाई 1,859 मिलीमीटर और ऊंचाई 1,623 मिलीमीटर है। इसका व्हीलबेस 2,681 मिलीमीटर का है। यानी पिछली त्त3 के मुकाबले नई एसयूवी के लगभग सभी प्रमुख आयाम बढ़ गए हैं। इसके किनारों पर 18 इंच के अलॉय व्हील, रूफ रेल और खिड़कियों की लाइन के साथ एल-आकार की सजावटी पट्टी दी गई है। इसमें सामान्य खिंचाव वाले दरवाजे के हैंडल ही रखे गए हैं।

पीछे की तरफ दो हिस्सों में विभाजित एलईडी टेल-लैंप दिए गए हैं। इन्हें बीच में रोशन होने वाले ऑडी लोगो के जरिये देखने में एक-दूसरे से जुड़ा हुआ बनाया गया है। पीछे के बंपर को उभरे हुए आकार में डिजाइन किया गया है और यहां भी सिल्वर स्किड प्लेट दी गई है। हालांकि भारतीय बाजार में मिलने वाली त्त3 में एस-लाइन बाहरी पैकेज उपलब्ध नहीं होगा।

आ रही है HYUNDAI की नई SUV BAYON, पेट्रोल के साथ CNG इंजन का विकल्प

भारतीय बाजार में अपनी SUV रेंज को और मजबूत करने की तैयारी कर रही है। कंपनी ने अपनी आने वाली नई मध्यम आकार की स्ङ्क के नाम का खुलासा कर दिया है। इसे Bayon नाम से पेश किया जाएगा। यह स्ङ्क कंपनी की मौजूदा Venue और Creta के बीच जगह बनाएगी। खास बात यह है कि भारत आने वाली Bayon यूरोप और मध्य एशिया में बिकने वाले इसी नाम के मॉडल से अलग होगी। कंपनी के अनुसार, इसका नाम फ्रांस के बास्क क्षेत्र के एक शहर से प्रेरित है। नई Bayon को लेकर काफी समय से चर्चा चल रही है और भारतीय सड़कों पर इसकी परीक्षण कारें कई बार देखी जा चुकी हैं। अब नाम सामने आने के बाद इस स्ङ्क को लेकर तस्वीर कुछ और साफ हो गई है। इसे इस त्योहारी मौसम में बाजार में उतारे जाने की उम्मीद है। कीमत के मामले में यह ष्टह्म्द्गह्लड्ड से सस्ती होगी और इसकी संभावित एक्स-शोरूम कीमत 9 लाख से 14 लाख रुपये के बीच हो सकती है।

Verna जैसी हेडलाइट और क्रॉसओवर डिजाइन

का डिजाइन पारंपरिक चौकोर स्ङ्क की तुलना में क्रॉसओवर जैसा होगा। परीक्षण के दौरान सामने आई तस्वीरों में इसके आगे की तरफ दो हिस्सों में बंटी हेडलाइट व्यवस्था देखने को मिली है। ऊपर पूरी चौड़ाई में एलईडी लाइट पट्टी दी जा सकती है, जबकि बंपर पर लगी मुख्य हेडलाइट का डिजाइन ङ्क्षद्गह्म्ठ्ठड्ड से मिलता-जुलता नजर आता है। आगे दो हिस्सों में बना एयर इनटेक और बीच में नंबर प्लेट लगाने की जगह दी गई है।

साइड से देखने पर क्क्षु4श्ठ्ठ की खिड़कियों की रेखा पीछे की ओर ऊपर उठती है। ष्ट-पिलर के पास इसमें खास मोड़ दिया गया है, जो इसके डिजाइन को अलग पहचान देता है। स्ङ्क में सामान्य दरवाजे के हैंडल, रूफ रेल और उभरे हुए व्हील आर्च मिलेंगे। इसका बाहरी रूप कुछ हद तक श्व×ह्लद्गह्म् की याद दिलाता है, हालांकि इसमें भारी बॉडी क्लैडिंग नहीं दिखाई देती। पीछे की तरफ भी पतली एलईडी लाइट पट्टी दी गई है, जो आगे की लाइट व्यवस्था से मेल खाती है।

460 किमी से ज्यादा रेंज और 1,200 किलो तक भार, KIA ने पेश की नई PV7 इलेक्ट्रिक वैन

किआ ने अपनी इलेक्ट्रिक व्यावसायिक वाहन श्रृंखला में एक और बड़ा मॉडल जोड़ दिया है। कंपनी ने PV5 के बाद अब PV7 इलेक्ट्रिक वैन पेश की है। यह वैन यात्रियों के साथ-साथ सामान ढोने के काम भी आएगी। इसके Passenger संस्करण में बाजार के हिसाब से 11 लोगों तक के बैठने की व्यवस्था होगी, जबकि Cargo संस्करण 1,200 किलोग्राम तक सामान ले जा सकेगा। किआ की योजना इसे 2027 की दूसरी छमाही में दक्षिण कोरिया और यूरोप के बाजारों में उतारने की है। भारत में इसकी बिक्री को लेकर अभी कंपनी ने कोई घोषणा नहीं की है। 460 किमी से ज्यादा चलेगी। किआ के E-GMP.S इलेक्ट्रिक वाहन प्लेटफॉर्म पर तैयार किया

गया है। इसमें 71.5 किलोवाट-घंटे और 96.2 किलोवाट-घंटे की दो बैटरी का विकल्प मिलेगा। दोनों ही बैटरी के साथ आगे लगी इलेक्ट्रिक मोटर दी गई है। यह मोटर अधिकतम 200 किलोवाट यानी करीब 268 हॉर्सपावर की ताकत और 420 न्यूटन मीटर का टॉर्क देती है।

सबसे ज्यादा रेंज वाला Long Range Cargo मॉडल एक बार चार्ज करने पर 460 किलोमीटर से ज्यादा चल सकेगा। यह आंकड़ा WLTP परीक्षण के आधार पर बताया गया है। शुरुआत में क्क्ङ्क7 को फ्रंट-व्हील ड्राइव के साथ बाजार में उतारा जाएगा। बाद में दो मोटर वाला ऑल-व्हील ड्राइव संस्करण भी लाने की योजना है।

25 मिनट के आसपास में 10 से 80 प्रतिशत चार्ज

चार्जिंग के मामले में भी क्क्ङ्क7 को तेज बनाया गया है। इसमें 800 वोल्ट की चार्जिंग तकनीक मिलती है और 350 किलोवाट के डीसी फास्ट चार्जर से इसकी बैटरी को 10 से 80 प्रतिशत तक करीब 20 से 25 मिनट में चार्ज किया जा सकता है। वैन में आगे एसी और डीसी दोनों तरह की चार्जिंग के लिए पोर्ट दिया गया है। पीछे की तरफ अतिरिक्त एसी चार्जिंग पोर्ट का विकल्प भी मिलेगा। इसके अलावा ङ्क2रु सुविधा के जरिए वैन की बैटरी से बाहरी उपकरण और काम में आने वाले बिजली से चलने वाले औजार भी चलाए जा सकेंगे।

मॉडल में भारी सामान ले जाते समय वाहन के व्यवहार को उसी हिसाब से बदलने वाला खास ड्राइविंग मोड भी दिया गया है।

PV| Cargo को मुख्य रूप से सामान की डिलीवरी, लॉजिस्टिक्स और व्यावसायिक बेड़े में इस्तेमाल के लिए तैयार किया गया है। अलग-अलग बाजारों के अनुसार इसमें दो या तीन सीटों की व्यवस्था होगी।

मॉडल में 6.1 घन मीटर तक सामान रखा जा सकता है, जबकि मॉडल में यह जगह बढ़कर 8.0 घन मीटर हो जाती है। संस्करण 1,165 किलोग्राम तक और संस्करण 1,200 किलोग्राम तक भार उठा सकेगा। स्श्ठ्ठद्द मॉडल में सामान रखने के लिए 550 मिलीमीटर की लोडिंग ऊंचाई है और इसमें तीन तक रखे जा सकते हैं।

श्रमसाधना
www.shramsadhnanews.com

हिन्दी दिवस विशेष

दर्शक, कमाई और पहचान हिंदी की, सितारों की जुबान अंग्रेजी...!

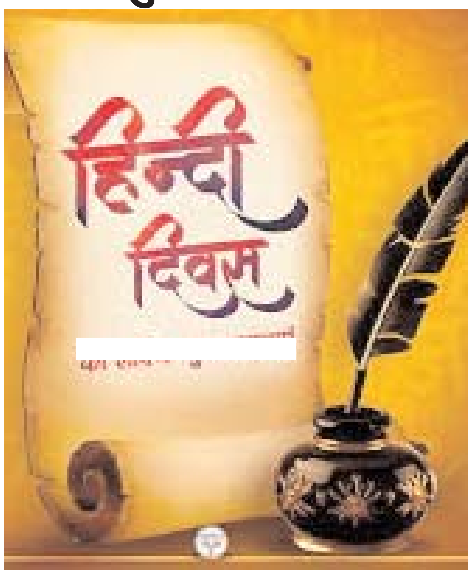

अपनी हिंदी की तो बात ही निराली है। जिस देश में हिंदी फिल्मों के कलाकार हिंदी में अभिनय करके करोड़ों कमाते हैं, उसी देश में इंटरव्यू देने बैठते ही उनकी हिंदी अचानक छुट्टी पर चली जाती है और अंग्रेज़ी नौकरी पर हाज़िर हो जाती है। फिल्म हिंदी की, संवाद हिंदी के, दर्शक हिंदी वाले, तालियाँ हिंदी मेंज्लेकिन जैसे ही कैमरा इंटरव्यू के लिए घूमता है– "Well… I think… basically… you know…"और दर्शक सोचता रह जाता है-भाई, फिल्म में तो तुम हिंदी बोल रहे थे, यहाँ कौन-सी फिल्म चल रही है? कुछ सितारों को तो अंग्रेज़ी बोलते देखकर ऐसा लगता है जैसे हिंदी बोलना उनके स्टारडम के स्तर से नीचे की चीज हो।

हिंदी में सवाल पूछो तो चेहरे पर ऐसी गंभीरता आ जाती है, जैसे पत्रकार ने उनसे ÷आयकर विभाग÷ की पूरी ÷फाइल÷ माँग ली हो। उनकी आंख से आंख मिलाकर देखो तो ऐसा लगता है जैसे कोई गुनाह कर दिया हो। लेकिन अंग्रेज़ी में सवाल आया नहीं कि मुस्कान खिल के चौड़ी हो उठती है–÷Absolutely! I completely agree…और know-w जैसे शब्दों का रिपीटेशन हो जाता है।÷ भाई, आपसे पूछा क्या गया था और आपने जवाब क्या दिया? मजेदार बात यह है कि जिस हिंदी फिल्म के प्रचार के लिए इंटरव्यू हो रहा है, उसी इंटरव्यू में हिंदी को किनारे कर अंग्रेज़ी की लाल कालीन बिछा दी जाती है। फिल्म का नाम हिंदी, पोस्टर हिंदी, गाने हिंदी, कहानी हिंदीज्बस कलाकार का इंटरव्यू अंग्रेज़ी में! शायद उन्हें लगता है कि हिंदी में बोलेंगे तो स्टार कम और आम आदमी ज्यादा लगेंगे। उन्हें ऐसा लगता हैं कि अंग्रेजी बोलने से उनका स्टैंडर्ड मेंटेन हो जाता है। अंग्रेज़ी में दो-चार वाक्य बोलते ही उन्हें लगता है कि व्यक्तित्व में साबुन की तरह निखार के साथ अंतरराष्ट्रीय चमक आ गई हैं और हमारे एंकर भी कमाल करते हैं। हिंदी चैनल पर हिंदी फिल्म के कलाकार को बुलाकर पहला सवाल अंग्रेज़ी में पूछेंगे। कलाकार अंग्रेज़ी में जवाब देगा। फिर एंकर हिंदी में उसका मतलब बताएगा। दर्शक टीवी के सामने बैठकर सोचता है-÷जब दोनों को हिंदी आती है तो बीच में यह अंग्रेज़ी किस खुशी में टपक गई?÷

यह अंग्रेज़ी से विरोध नहीं है। अंग्रेज़ी सीखिए, बोलिए, दुनिया घूमिए-किसी को आपत्ति नहीं। लेकिन जिस भाषा के नाम पर पहचान, लोकप्रियता और कमाई मिली हो, उसके प्रति सहजता और सम्मान भी तो दिखना चाहिए।

हिंदी में बोलना पिछड़ापन नहीं है और अंग्रेज़ी बोलना कहीं से कहीं तक आधुनिकता का प्रमाण भी नहीं हो सकता।

असल में आधुनिकता तो यह है कि आप जिस भाषा में सहज हों, उसमें बिना ÷हीन भावना÷ के बात कर सकें।

वरना स्थिति यही रहेगी-हिंदी फिल्में बनेंगी हिंदी में,

हिंदी से ही इनकी कमाई होगी, तालियाँ भी मिलेंगी हिंदी वालों से और इंटरव्यू होगा अंग्रेज़ी में! वाह रे... हिंदी सिनेमा! तेरी कमाई हिंदी की, तेरी पहचान हिंदी की, तेरे दर्शक हिंदी के-बस तेरे सितारों की जुबानज इंटरव्यू आते ही विदेशी हो जाती है!

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

कृष्ण में खो जाने की अविरल धारा है, राधा

वीरेंद्र हीरालाल पथरिया

राधाष्टमी केवल राधा जी के जन्म का उत्सव नहीं है, बल्कि यह प्रेम के उस स्वरूप को समझने का अवसर है, जिसमें पाने से अधिक महत्व समर्पण का है। संसार में हम जिसे प्रेम कहते हैं, उसमें अक्सर कोई न कोई अपेक्षा छिपी रहती है, साथ मिले, अपनापन मिले, बदले में प्रेम मिले। लेकिन राधा का प्रेम इन अपेक्षाओं से बहुत ऊपर है। वहां प्रेम किसी को अपना बनाने का प्रयास नहीं, बल्कि स्वयं को प्रियतम में पूरी तरह समर्पित कर देने की साधना है।

इसीलिए राधा को केवल कृष्ण की प्रेयसी के रूप में देखना उनके आध्यात्मिक स्वरूप को सीमित कर देना होगा। राधा उस प्रेम की प्रतीक हैं, जिसमें प्रेमी का अपना अस्तित्व धीरे-धीरे मिटने लगता है और प्रिय ही उसके जीवन का केंद्र बन जाता है।

ईश्वर तक पहुंचने के अनेक मार्ग बताए गए हैं ज्ञान, कर्म, योग और भक्ति। लेकिन प्रेम का मार्ग सबसे सहज है। जब हृदय में सच्चा प्रेम जागता है तो अहंकार अपने आप कमजोर पड़ने लगता है। शिकायतों की जगह स्वीकार आता है, अपेक्षाओं की जगह समर्पण और दूरी की जगह आत्मीयता जन्म लेती है। इसी कारण प्रेम को हर पीड़ा का अंत और हर शुभ

का आरंभ कहा गया है।राधा इसी प्रेम की सर्वोच्च अनुभूति हैं।

÷जो धरती के आकर्षण से नीचे की और बहे वो धारा और जो आकर्षण तोड़ कर ऊपर की ओर जाये वो राधा÷

अर्थात धरती का आकर्षण किसी धारा को नीचे की ओर बहाता है। वह अपने उद्गम से निकलकर आगे बढ़ती है और अंततः सागर में मिलकर अपना अलग अस्तित्व खो देती है। लेकिन राधा की आध्यात्मिक यात्रा इसके विपरीत है। वे संसार के आकर्षण से ऊपर उठने की प्रेरणा देती हैं। बाहरी संसार से भीतर की ओर लौटना और अपने मूल स्रोत तक पहुंचना ही राधा तत्व का संकेत है।

मनुष्य का जीवन भी एक धारा जैसा ही है। जन्म से लेकर मृत्यु तक हम लगातार बाहर की ओर भागते रहते हैं, सुख, संपत्ति, प्रतिष्ठा, संबंध और इच्छाओं के पीछे। हमें लगता है कि अगली उपलब्धि हमें पूर्ण कर देगी, लेकिन एक इच्छा पूरी होते ही दूसरी सामने खड़ी हो जाती है। राधा हमें इस दौड़ से हटाकर भीतर देखने की प्रेरणा देती हैं।

राधा का प्रेम हमें सिखाता है कि ईश्वर को पाने के लिए संसार से भागना आवश्यक नहीं है। आवश्यकता केवल इतनी है कि मन के भीतर बैठे अहंकार को धीरे-धीरे विदा किया जाए। जब 'मैं' कम होने लगता है, तब 'तुम' का अनुभव गहरा होने लगता है और यही अनुभव आगे चलकर भक्ति में बदल जाता है।

इसी भाव को एक सुंदर आध्यात्मिक प्रतीक में समझा जा सकता है, हर छूटती सांस कृष्ण है और हर भीतर आती सांस राधा। एक सांस हमें जीवन से बाहर की ओर ले जाती है और दूसरी फिर जीवन से जोड़ देती है। जैसे प्रत्येक क्षण राधा और कृष्ण का एक मौन संवाद हमारे भीतर चलता रहता हो।

कृष्ण जीवन के सार हैं तो राधा उस सार को अनुभव करने का आधार। कृष्ण परम चेतना हैं तो राधा उस चेतना तक पहुंचने वाली प्रेममयी अनुभूति। कृष्ण को जानने का प्रयास ज्ञान हो सकता है, लेकिन कृष्ण को हृदय से महसूस करना प्रेम है। और प्रेम की उसी अनुभूति का नाम राधा है।

इसलिए राधाष्टमी का पर्व केवल पूजा और उत्सव तक सीमित न रहे। यह हमारे लिए आत्मचिंतन का अवसर बने। हम अपने संबंधों में देखें कि हमारा प्रेम कितना निस्वार्थ है, हमारी भक्ति में कितनी अपेक्षा है और हमारे समर्पण में कितना अहंकार बचा हुआ है।

क्योंकि राधा का संदेश यही है कि प्रेम में सबसे बड़ी उपलब्धि किसी को पा लेना नहीं, बल्कि अपने भीतर के 'मैं' को खो देना है। जब अहंकार मिटता है तो प्रेम प्रकट होता है, और जहां प्रेम पूर्ण होता है, वहां भक्त और भगवान के बीच दूरी नहीं रह जाती। राधा उसी मिटती हुई दूरी का नाम हैं।

इस राधाष्टमी पर यदि हम राधा को सच में समझना चाहते हैं, तो केवल उनके चरणों में फूल चढ़ाना पर्याप्त नहीं होगा। अपने भीतर प्रेम, करुणा, समर्पण और अहंकार से मुक्ति के कुछ फूल भी खिलाने होंगे। कृष्ण जीवन का सार हैं, राधा जीवन का आधार; कृष्ण परम सत्य हैं, तो उस सत्य तक पहुंचने वाली सबसे कोमल अनुभूति राधा हैं।

कहानी बदलाव की

जल जीवन मिशन से बदला जीवनः ग्राम मड़खेड़ा के 245 परिवारों को मिला "हर घर जल" का उपहार

शिवपुरी, जीएनएस।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा हर घर जल पहुंचाने के संकल्प के साथ 'जल जीवन मिशन' से पोहरी विकासखंड के ग्राम मड़खेड़ा के ग्रामीणों के जीवन में बड़ा बदलाव आया है। जिला मुख्यालय से 43 किलोमीटर दूर स्थित इस गाँव में लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा उच्च स्तरीय पानी की टंकी का निर्माण कर घर-घर नल कनेक्शन दिए गए हैं। जल जीवन मिशन के प्रभावी क्रियान्वयन से गाँव के सभी 245 परिवारों के जीवन में बड़ा बदलाव आया है और वर्षों पुराना पेयजल संकट हमेशा के लिए समाप्त हो गया है।

योजना के क्रियान्वयन से पूर्व ग्राम मड़खेड़ा के निवासी पेयजल हेतु केवल स्थानीय हैंडपंपों एवं दूर-दराज के स्रोतों पर ही निर्भर थे। सबसे अधिक कठिनाई गाँव की महिलाओं को उठानी पड़ती थी, जिन्हें पीने और घर के कामकाज के लिए लगभग 2 किलोमीटर दूर घाटी के नीचे से पानी लाना पड़ता था। इस कड़ी मशक्कत के कारण उनका अधिकतर समय पानी की व्यवस्था में ही बीत जाता था, जिससे मजदूरी करने वाले महिला-पुरुष समय पर काम पर नहीं जा पाते थे और बच्चों की पढ़ाई भी प्रभावित होती थी।

घर-घर पहुँचा पानी, समय की बचत और आर्थिक संबल

जल जीवन मिशन के अंतर्गत नल-जल योजना स्थापित होने से अब ग्रामीणों को घर पर ही नल खोलते ही पर्याप्त और शुद्ध पेयजल उपलब्ध हो जाता है। पानी भरने में जो घंटों का समय बर्बाद होता था, उसकी बचत होने से ग्रामीण अब अपने दैनिक कामकाज और मजदूरी पर समय से जा पा रहे हैं, जिससे उनकी आय और जीवनशैली में सकारात्मक सुधार आया है।

योजना के तहत गाँव के स्कूलों एवं आँगनबाड़ियों में भी नल कनेक्शन दिए गए हैं, जिससे बच्चों को अब घर से पानी की बोतलें लेकर नहीं आना पड़ता और वे अपनी पढ़ाई पर पूरा ध्यान दे पा रहे हैं। इसके साथ ही गाँव में जल स्वच्छता को लेकर नई जागरूकता आई है। पानी को सहेजने और स्रोतों की साफ-सफाई पर ध्यान दिया जा रहा है तथा आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा समय-समय पर पेयजल की गुणवत्ता का परीक्षण भी किया जा रहा है।

सफलता की नई मिसाल और शासन का आभारः शुद्ध और पर्याप्त जल मिलने से ग्राम मड़खेड़ा के निवासियों के जीवन में अभूतपूर्व सुगमता आई है। घर-घर नल लग जाने से खुश ग्रामीणों ने इस कल्याणकारी पहल के लिए शासन, प्रशासन और लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग का हृदय से धन्यवाद व्यक्त किया है। मड़खेड़ा गाँव की यह सफलता दर्शाती है कि जल जीवन मिशन किस प्रकार ग्रामीण अंचल की दिशा और दशा बदलकर ग्रामीणों के जीवन को सुगम बना रहा है।

अप्रेन्टिसशिप युवा संगम एवं रोजगार व स्वरोजगार मेला 22 को

ग्वालियर, जीएनएस।

युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मंशा के अनुरूप 22 सितम्बर को प्रातः 11 बजे से गदाईपुरा रेडीमेड गारमेंट पार्क परिसर में स्थित जिला रोजगार कार्यालय में एक दिवसीय रोजगार, स्वरोजगार एवं अप्रेटिंसशिप युवा संगम का आयोजन होगा। जिला रोजगार कार्यालय, जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र तथा शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण शाला के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित होने जा रहे इस रोजगार मेले में आकर्षक पैकेज पर निजी क्षेत्र की 34 कंपनियां भर्ती के लिये आ रही हैं। उप संचालक जिला रोजगार कार्यालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार युवा संगम में भर्ती करने आ रही कंपनियों में क्विक आईटी सॉल्यूशन इन कंसल्टेंसी ग्वालियर, पेटीएम सर्विस प्राइवेट लिमिटेड ग्वालियर, भारत- पे प्राइवेट लिमिटेड ग्वा0, आई सेक्ट ग्वालियर, टीमलीस प्राइवेट लिमिटेड भोपाल, इन्दौर, दिल्ली, जमुना आटो प्राइवेट लिमिटेड मालनपुर, एस0 आर0 एफ0 प्राइवेट लिमिटेड मालनपुर, भारतीय एक्सा लाइफ इन्श्योरेंस ग्वालियर, सेनेटस प्राइवेट लिमिटेड ग्वा0, जॉबफेयर नाउ प्राइवेट लिमिटेड चेकमेट सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड जामनगर गुजरात, ब्लिकिट वेयर हाउस प्राइवेट लिमिटेड फारूख नगर गुरूग्राम जे0बी0 मंधाराम फूड प्राइवेट लिमिटेड ग्वालियर, कुल कवच वैश्विक सुरक्षा सर्विस अहमदाबाद, ए0 एस0 एम0 हुन्डई प्राइवेट लिमिटेड ग्वालियर आर0 एस0 पी0 एल0 मेनपावर सर्विस पंजाब, ग्लोवल सिक्योरिटी सर्विस प्राइवेट लिमिटेड ठाठीपुर ग्वालियर, एम0 आर0 ए70 टायर प्राइवेट लिमिटेड हैदराबाद, धम्मा इंटरप्राइजेज नूडल मैनुफेक्क्चरिंग खेड़ा, गुजरात, अप्रेंटिसेज ट्रेनीज गाँव मंगार, करनाल, हरियाणा, रविया वर्कफॉर्स आदि।

श्रमसाधना
www.shramsadhnanews.com

घर में काम करने वाली महिलाओं में भी लंग कैंसर का खतरा? जानें ऐसा क्यों

फेफड़ों के कैंसर को आमतौर पर धूम्रपान से जोड़कर देखा जाता है, लेकिन हर मरीज का धूम्रपान करना जरूरी नहीं है. लंबे समय तक घर की रसोई में खाना पकाने वाली महिलाओं में भी धुएं और प्रदूषकों के संपर्क को लेकर चिंता जताई जाती रही है. क्या आप जानते हैं कि किचन में खाना पकाते हुए ऑयल से निकलने वाले धुएं से महिलाओं को फेफड़ों का कैंसर अपनी चपेट में ले सकता है. इस टॉपिक पर डॉ. जे.बी. शर्मा (डायरेक्टर, एक्शन इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल ऑन्कोलॉजी एंड इम्यूनोथेरेपी, एक्शन कैंसर हॉस्पिटल, दिल्ली) से बात की.

डॉक्टर कहते हैं कि खासतौर पर जब रसोई में पर्याप्त वेंटिलेशन न हो और खाना पकाते समय तेल तेज तापमान पर गर्म होकर धुआं छोड़ता रहे, तो सांस के साथ कई सूक्ष्म कण और रासायनिक पदार्थ शरीर के अंदर पहुंच सकते हैं. कुकिंग ऑयल को बहुत ज्यादा गर्म करने पर निकलने वाला धुआं आंखों और गले में जलन के साथ-साथ सांस की नली को भी प्रभावित कर सकता है.

क्यों होता है ऐसा?

लगातार और लंबे समय तक ऐसे धुएं के संपर्क में रहने से श्वसन तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशंका रहती है. हालांकि, यह कहना सही नहीं होगा कि केवल खाना पकाने के तेल का धुआं ही फेफड़ों के कैंसर का कारण बनता है. कैंसर का जोखिम कई कारकों पर निर्भर करता है, जिनमें तंबाकू का सेवन, वायु प्रदूषण, सेकेंड हैंड स्मोक, कुछ व्यावसायिक रसायनों का संपर्क और आनुवंशिक कारण शामिल हैं.

रसोई में किन बातों का रखें ध्यान?

खाना बनाते समय रसोई की खिड़की-दरवाजे खुले रखना और एग्जॉस्ट फैन या चिमनी का इस्तेमाल करना धुएं के संपर्क को कम करने में मदद कर सकता है. तेल को बार-बार तेज आंच पर गर्म करने से बचना चाहिए. अगर तेल से लगातार धुआं निकल रहा है तो आंच कम करना बेहतर है. तड़का या डीप फ्राई करते समय भी रसोई में उचित वेंटिलेशन रखना जरूरी है.

लंबे समय तक रहने वाली खांसी, सांस फूलना, सीने में दर्द, आवाज में बदलाव, बार-बार सांस से जुड़ा संक्रमण, बिना वजह वजन कम होना या खांसी के साथ खून आना जैसे लक्षण दिखाई दें तो इन्हें सामान्य समस्या समझकर नजरअंदाज नहीं करना चाहिए. ऐसे लक्षण कई दूसरी बीमारियों में भी हो सकते हैं, लेकिन लगातार बने रहने पर डॉक्टर से जांच कराना जरूरी है.

धूम्रपान न करने वालों को भी सावधानी

धूम्रपान न करने का मतलब यह नहीं है कि फेफड़ों से जुड़ी हर बीमारी का जोखिम पूरी तरह खत्म हो गया. घर के अंदर का वायु प्रदूषण, बाहर का प्रदूषण और लंबे समय तक धुएं के संपर्क जैसे कारक भी श्वसन स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं. इसलिए रसोई में बेहतर वेंटिलेशन और धुएं को बाहर निकालने की व्यवस्था महिलाओं के साथ पूरे परिवार के स्वास्थ्य के लिए जरूरी है. खाना पकाने के तेल का धुआं फेफड़ों के कैंसर का अकेला या निश्चित कारण नहीं माना जा सकता, लेकिन लगातार धुएं के संपर्क से बचना श्वसन स्वास्थ्य के लिए बेहतर है.

फैटी लिवर की है दिक्कत, पेशेंट को दूध पीना चाहिए या नहीं? डॉक्टर ने दिया जवाब

आज भारत में ज्यादातर लोग फैटी लिवर का शिकार हैं. खराब खानपान और फिजिकली एक्टिव न होने की वजह से लिवर की हेल्थ कम उम्र में भी खराब होने लगी है. इसमें सबसे ज्यादा होने वाली समस्या फैटी लिवर की है. इसके बढ़ने पर लिवर से मिलने वाले पोषक तत्वों पर असर पड़ता है. कम उम्र में ही स्किन का डल नजर आना, हर समय एसिडिटी या अपच जैसी कई दिक्कतें शरीर में लगातार होने लगते हैं. इसलिए फैटी लिवर अगर अल्ट्रासाउंड में निकले तो खानपान का खास ख्याल रखने की सलाह दी जाती है. इसी से जुड़ा एक सवाल है कि फैटी लिवर होने पर दूध पीना चाहिए या नहीं. चलिए आपको डॉक्टर के जरिए इसका जवाब देते हैं

फैटी लिवर होने पर दूध पीना चाहिए या नहीं

डॉक्टर कुणाल दास (डायरेक्टर, गैस्ट्रोएंटरोलॉजी, हेपेटोलॉजी एंड एंडोस्कोपी, यशोदा मेडिसिटी) कहते हैं कि फैटी लिवर होने का मतलब यह नहीं है कि मरीज को दूध पूरी तरह छोड़ देना चाहिए. अगर दूध आसानी से पचता है और उससे कोई परेशानी नहीं होती, तो इसे सामान्य मात्रा में लिया जा सकता है. हां, दूध का चुनाव करते समय उसकी फैट और कैलोरी पर ध्यान देना जरूरी है. खासकर ऐसे मरीज जिनका वजन ज्यादा है या जिन्हें डायबिटीज और कोलेस्ट्रॉल की समस्या है, उनके लिए टोंड या लो-फैट दूध एक बेहतर विकल्प हो सकता है.

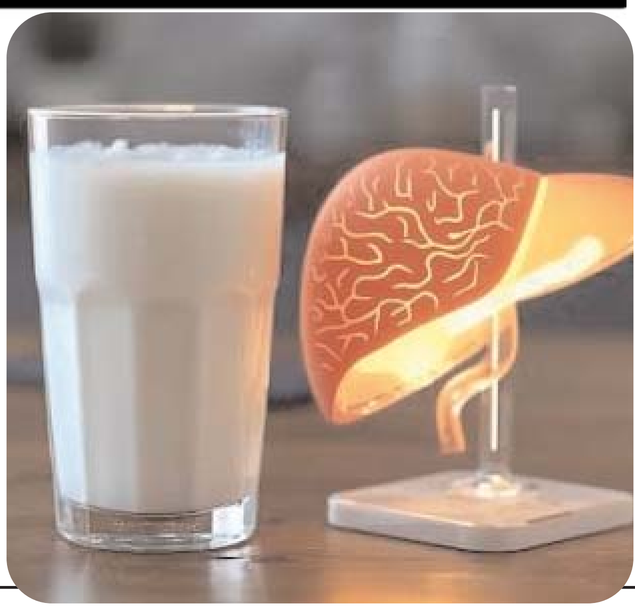

फैटी लिवर में अक्सर मरीज किसी एक चीज को लेकर परेशान रहते हैं कि क्या खाना है और क्या बिल्कुल नहीं खाना है. लेकिन लिवर पर असर सिर्फ दूध या किसी एक खाद्य पदार्थ से नहीं पड़ता. ज्यादा मीठा खाना, शुगर वाली ड्रिंक्स, तला-भुना और जरूरत से ज्यादा कैलोरी लेना ज्यादा बड़ी चिंता है. इसलिए दूध बंद करने के बजाय पूरी डाइट को संतुलित करना ज्यादा जरूरी है.

लैक्टोज इनटॉलरेंस वाले रखें खास ख्याल

अगर किसी को दूध पीने के बाद गैस, पेट फूलना या दस्त जैसी शिकायत होती है, तो यह लैक्टोज इनटॉलरेंस की वजह से हो सकता है. ऐसे में डॉक्टर से सलाह लेकर

विकल्प लेने पर विचार किया जा सकता है.

फैटी लिवर में सबसे अहम चीज वजन को नियंत्रित रखना और नियमित रूप से शारीरिक गतिविधि करना है. रोज की डाइट में छोटे-छोटे बदलाव और नियमित व्यायाम लिवर में जमा फैट को कम करने में काफी मदद कर सकते हैं.

इसलिए मरीजों को डरने या अनावश्यक रूप से कई चीजें छोड़ने के बजाय अपनी पूरी लाइफस्टाइल पर ध्यान देना चाहिए.

20 sep 2026 WEEKLY.qxd 9/19/2026 6:14 PM Page 11

क्या आपके गाल पर भी है तिल? जानिए कैसा रहने वाला है भविष्य

जिन लोगों के गालों पर तिल होता है उनके बारे में कहा जाता है कि वे बेहद सुंदर दिखाई देते हैं. सुंदरता की दृष्टि से ही नहीं बल्कि ज्योतिष शास्त्र के महत्वपूर्ण भाग सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार भी गालों पर तिल का विशेष महत्व है. यह न केवल चेहरे की सुंदरता बढ़ाता है बल्कि व्यक्ति के चरित्र, सुंदरता और भविष्य के भाग्य का भी संकेत देता है. यहां सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार इस बारे में पूरी जानकारी दी गई है कि क्या गालों पर तिल होना वास्तव में शुभ होता है?

सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार, गाल पर तिल होना बहुत ही शुभ और सौभाग्यशाली संकेत है. ऐसे व्यक्ति को जीवन में आसानी से सफलता और अच्छे अवसर प्राप्त होते हैं. उनके जीवन में धन की कोई कमी नहीं होती और हर प्रकार का सुख व्याप्त रहता है. ज्योतिषाचार्यों का कहना है कि उन्हें जीवन के हर पड़ाव पर भाग्य का साथ मिलता है. पुरुष के दाये गाल पर और महिला के बाएं गाल पर तिल बहुत शुभ माना जाता है.

ऐसे लोगों का व्यवहार होता है अच्छा

गालों पर तिल वाले लोग स्वभाव से सौम्य, सरल और प्रेममय होते हैं. वे जहां भी जाते हैं अपनी बोलने की शैली, मनमोहक मुस्कान और अच्छे व्यवहार से सबका ध्यान आकर्षित कर लेते हैं. समाज में उन्हें विशेष सम्मान और पहचान मिलती है. सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार, ऐसे लोगों में उच्च आत्मविश्वास और जुझारूपन होता है. वे चाहे जो भी कार्य हाथ में लें, अपने लक्ष्य को प्राप्त करने और उसमें सफल होने तक निरंतर प्रयास करते हैं. उनमें चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना करने का गुण होता है.

तिल सौभाग्य, सुंदरता, समृद्धि का प्रतीक

गाल पर तिल होना ईश्वरीय कृपा का प्रतीक भी माना जाता है. वे न केवल अपने व्यवहार से सबका स्नेह पाते हैं बल्कि व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में भी अपार तरक्की करते हैं. कुल मिलाकर, गाल पर तिल होना अशुभ संकेत नहीं है बल्कि यह सौभाग्य, सुंदरता, आकर्षण और समृद्धि का शुभ प्रतीक है.

बुध 26 सितंबर को करेंगे गोचर, तुला सहित इन 4 राशियों के लिए 'राजयोग' होगा शुरू

ब्रह्मांड में ग्रह लगातार हलचल करते रहते हैं. इस बीच सितंबर के आखिर में बुधदेव गोचर करने जा रहे हैं. दरअसल, ज्योतिष शास्त्र में बुध को बुद्धि, वाणी, विद्या और व्यापार का तत्व माना जाता है. बुध मिथुन और कन्या राशियों का स्वामी हैं. जब बुध अपनी स्थिति बदलते हैं, तो इसका प्रभाव सभी राशियों पर पड़ता है. वह इस समय अपनी ही राशि कन्या में गोचर कर रहे हैं. इस स्थिति में बुध 26 सितंबर को तुला राशि में प्रवेश करेंगे. तुला राशि का स्वामी शुक्रदेव हैं.

ज्योतिष शास्त्र में बुध और शुक्र के बीच मित्रतापूर्ण संबंध माना जाता है इसलिए बुध का यह गोचर व्यापार, करियर, आर्थिक मामलों आदि में अच्छे परिणाम देगा. हालांकि मेष से लेकर मीन तक सभी राशियों पर बुध के तुला राशि में गोचर का प्रभाव पड़ेगा, लेकिन माना जाता है कि यह गोचर कुछ राशियों के लिए बेहद भाग्यशाली साबित होगा. इसके अलावा, इन राशियों के करियर में अच्छी तरक्की, व्यापार में लाभ और आर्थिक स्थिति में सुधार होने की भी संभावना है. तो आइए जानते हैं कि बुध के तुला राशि में गोचर से किन राशियों को लाभ होगा?

कन्या राशि

बुध कन्या राशि के दूसरे भाव में गोचर कर रहे हैं. इसके कारण इस राशि के जातकों को आर्थिक लाभ होगा. नौकरीपेशा लोगों को ऑफिस में नई जिम्मेदारियां या पद मिलने की संभावना है. आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा. आप सौंपे गए महत्वपूर्ण कार्यों को सफलतापूर्वक पूरा कर सकेंगे. व्यापारियों को भी लाभप्रद नए कॉन्ट्रेक्ट मिलने की संभावना है. कुछ लोगों को इनकम के नए सोर्स भी प्राप्त हो सकते हैं.

तुला राशि

बुध तुला राशि के प्रथम भाव में गोचर करेंगे. इससे तुला राशि के जातकों के व्यक्तित्व में सुधार आएगा. आत्मविश्वास बढ़ेगा. महत्वपूर्ण निर्णयों पर आप प्रभावी ढंग से विचार कर सकेंगे. प्रमोशन या कार्यस्थल पर नई जिम्मेदारियां मिल सकती हैं. व्यापारियों को नए प्रोजेक्टों के माध्यम से अपने व्यवसाय को विस्तार देने के अवसर मिलेंगे. व्यापार में आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है.

मेष राशि

बुध मेष राशि के सातवें भाव की ओर गोचर कर रहे हैं. इसके कारण इस राशि के जातकों को संयुक्त बैठकों के माध्यम से अच्छा लाभ मिलेगा. उन्हें कार्यक्षेत्र में नई जिम्मेदारियां मिल सकती हैं. व्यापारियों को नए कॉन्ट्रेक्ट मिल सकते हैं जिनसे उन्हें अच्छा लाभ होगा. इनकम में वृद्धि और व्यापार में अच्छी तरक्की की संभावना है.

कुंभ राशि

बुध कुंभ राशि के नौवें भाव में गोचर कर रहे हैं. इसके चलते इन राशियों के लिए लंबे समय से रुके हुए काम सफलतापूर्वक पूरे होंगे. नौकरी की तलाश कर रहे लोगों को अच्छी नौकरी मिलने की संभावना है. कार्यक्षेत्र में कौशल और निर्णय लेने की क्षमता की सराहना हो सकती है. नए संबंध और व्यापार संबंधी मामलों में आपको अच्छे परिणाम मिलेंगे. विशेष रूप से इस दौरान निवेश से अच्छा आर्थिक लाभ होने की संभावना है.

हर पूजा में क्यों बोला जाता है स्वस्ति वाचन मंत्र? जानिए इसका अर्थ और महत्व

पूजा-पाठ, हवन, यज्ञ और दूसरे धार्मिक अनुष्ठानों की शुरुआत में आपने पंडितों को स्वस्ति वाचन करते जरूर सुना होगा। वैदिक परंपरा में इसे शुभ कार्य के आरंभ में मंगलकामना और कल्याण की प्रार्थना से जोड़ा गया है। स्वस्ति वाचन में केवल व्यक्ति विशेष के लिए नहीं, बल्कि सभी के सुख, सुरक्षा और शांति की कामना की जाती है। यही वजह है कि धार्मिक अनुष्ठानों में इसका विशेष महत्व माना गया है।

क्या है स्वस्ति वाचन?

'स्वस्ति' शब्द का अर्थ कल्याण, मंगल या भलाई से जुड़ा है। स्वस्ति वाचन का उद्देश्य शुभ कार्य की शुरुआत में मंगलकामना करना है। इसमें वैदिक मंत्रों के माध्यम से देव शक्तियों से रक्षा, ज्ञान, पोषण और कल्याण की प्रार्थना की जाती है। इसका प्रमुख मंत्र ऋग्वेद के प्रथम मंडल के 89वें सूक्त में मिलता है।

यह है स्वस्ति वाचन मंत्र

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः।
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः।
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

इसके बाद ? शान्तिः शान्तिः शान्तिः का उच्चारण किया जाता है।

चार देव शक्तियों से कल्याण की प्रार्थना

इंद्र- मंत्र में महान कीर्ति और शक्ति वाले इंद्र से कल्याण की प्रार्थना की गई है।

पूषा- पूषा को जानने और पोषण करने वाली देव शक्ति के रूप में संबोधित किया गया है। उनसे मंगल और संरक्षण की कामना की जाती है।

तार्क्ष्य- वैदिक परंपरा में तार्क्ष्य का संबंध गरुड़ से जोड़ा जाता है। उनसे सुरक्षा और कल्याण की प्रार्थना की जाती है।

बृहस्पति- बृहस्पति को देवताओं का गुरु माना जाता है। उनसे ज्ञान, विवेक और सही मार्ग की कामना की जाती है।

तीन बार शांति क्यों?

मंत्र के अंत में '? शान्तिः शान्तिः शान्तिः' का उच्चारण किया जाता है। धार्मिक परंपरा में तीन बार शांति बोलने को विभिन्न प्रकार की बाधाओं से मुक्ति और मन, वातावरण तथा जीवन में शांति की कामना से जोड़ा जाता है। इसका मूल भाव शांतिपूर्ण और मंगलमय वातावरण की प्रार्थना है।

पूजा की शुरुआत में क्यों किया जाता है?

धार्मिक मान्यता के अनुसार स्वस्ति वाचन से शुभ कार्य के लिए सकारात्मक और मंगलमय वातावरण बनाने की कामना की जाती है। पूजा, हवन या यज्ञ शुरू करने से पहले देव शक्तियों का आह्वान किया जाता है, ताकि कार्य निर्विघ्न पूरा हो और सभी का कल्याण हो। विवाह, गृह प्रवेश, यज्ञ और अन्य संस्कारों में भी इसी भावना के साथ इसका पाठ किया जाता है।

जल छिड़कने का क्या महत्व?

कई अनुष्ठानों में स्वस्ति वाचन के दौरान कुशा या दर्भ के माध्यम से चारों दिशाओं में जल का छिड़काव किया जाता है। धार्मिक मान्यता में इसे स्थान की शुद्धि और मंगलकामना से जोड़ा जाता है। इसका भाव यह है कि जिस स्थान पर शुभ कार्य होने जा रहा है, वहां पवित्र और शांत वातावरण बना रहे।

सिर्फ अपने लिए नहीं, सर्वकल्याण की भावना

स्वस्ति वाचन की खास बात इसकी व्यापक मंगलकामना है। इसमें केवल पूजा करने वाले व्यक्ति के लिए सुख या सफलता नहीं मांगी जाती, बल्कि सुरक्षा, शांति और कल्याण की सामूहिक भावना दिखाई देती है।

श्रमसाधना
www.shramsadhnanews.com
फिल्मी
ग्वालियर, रविवार 20 सितम्बर 2026

तेलुगु फिल्म 'बोनी' से पहला बड़ा ब्रेक मिला था कृति खरबंदा

मुंबई। बालीवुड एक्ट्रेस कृति खरबंदा के कॅरियर की शुरुआत मॉडलिंग और विज्ञापन फिल्मों से हुई, जहां उनकी मासूम मुस्कान ने लोगों का ध्यान खींचा। इसके बाद साल 2009 में उन्हें तेलुगु फिल्म 'बोनी' से पहला बड़ा ब्रेक मिला। दक्षिण भारतीय फिल्मों में कुछ सालों तक अपनी प्रतिभा साबित करने के बाद उन्होंने 2016 में फिल्म 'राज रिबूट' से बॉलीवुड में कदम रखा। कृति के करियर का असली मोड़ 2017 में आया, जब वह राजकुमार राव के साथ फिल्म 'शादी में जरूर आना' में नजर आईं।

कृति ने इस भूमिका को सिर्फ निभाया नहीं, बल्कि उसे जिया। उन्होंने एक इंटरव्यू में बताया था कि फिल्म की शूटिंग के दौरान जब वह पारंपरिक दुल्हन के जोड़े में तैयार हुईं, तो सेट का माहौल इतना वास्तविक था कि उन्हें लगा मानो यह उनकी अपनी शादी हो रही हो। शादी की रस्में, सजावट, परिवार का भावुक माहौल इन सबने उन्हें अंदर तक झकझोर दिया। कृति के अनुसार, उस पल में काल्पनिक और वास्तविकता की सीमाएं धुंधली हो गई थीं। उन्होंने बताया कि वह बार-बार भावुक हो जाती थीं, क्योंकि उस दृश्य में वह उस लड़की की भावनाओं को महसूस कर रही थीं, जो अपने सपनों और स्वाभिमान के बीच चुनाव कर रही है।

इस फिल्म ने कृति को दर्शकों के दिलों में एक मजबूत पहचान दी और यह साबित किया कि वह केवल ग्लैमर का हिस्सा नहीं, बल्कि एक सशक्त अभिनेत्री हैं। कृति ने कहा था कि 'शादी में जरूर आना' उनके जीवन का एक जादुई अनुभव था। उन्हें इस फिल्म से जो प्यार और पहचान मिली, वह किसी भी आर्थिक सफलता से कहीं ज्यादा मायने रखती है। इससे पहले कृति ने कन्नड़ फिल्म 'प्रेम अड्डा' में भी यह दिखाया था कि वह किरदार के लिए किसी भी हद तक जा सकती हैं। उस फिल्म में उन्होंने बिना मेकअप के 80 के दशक की ग्रामीण लड़की का किरदार निभाया था। अपनी गोरी रंगत के कारण उस किरदार में ढलना आसान नहीं था, लेकिन उन्होंने अपनी मां के साथ मिलकर खुद कपड़े डिजाइन किए ताकि लुक पूरी तरह असली लगे।

शिवपुरी जिले में 17 अक्टूबर तक चलेगा सेवा-संकल्प अभियान

शिवपुरी जीएनएस

जिले में 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक एक माह का 'सेवा-संकल्प अभियान' आयोजित किया जाएगा। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट अर्पित वर्मा के निर्देशन में अभियान की तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। अभियान की शुरुआत 17 सितंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस पर 'आशीर्वाद का दीया' कार्यक्रम से होगी। इस दौरान जिले के प्रमुख स्थलों के साथ लाभार्थियों के घरों में भी दीप प्रज्वलित किए जाएंगे। शिवपुरी के सिद्धेश्वर मंदिर पर हजारों दीप जलाए जाएंगे।

अभियान के पहले दिन स्वास्थ्य केंद्रों एवं अन्य स्थानों पर रक्तदान शिविर भी आयोजित किए जाएंगे। जनपद पंचायतों, नगर पालिका एवं नगर परिषदों के प्रमुख स्थलों पर जनप्रतिनिधियों और गणमान्य नागरिकों की सहभागिता से सामूहिक दीप प्रज्ज्वलन होगा। विभिन्न शासकीय योजनाओं के लाभार्थी भी अपने घरों में दीप जलाकर अभियान में भागीदारी करेंगे।

अभियान के दौरान सेवा, स्वच्छता और सामाजिक सहभागिता से जुड़ी गतिविधियों के माध्यम से लोगों को 'विकसित भारत 2047' के संकल्प से जोड़ा जाएगा। शासकीय योजनाओं से लाभान्वित लोगों की सफलता की कहानियां भी सामने लाई जाएंगी। अभियान में सामाजिक एवं स्वयंसेवी संस्थाओं, शैक्षणिक संस्थानों, युवाओं, महिलाओं, स्व-सहायता समूहों और वरिष्ठ नागरिकों की भागीदारी रहेगी।

स्कूलों में चित्रकला और भाषण प्रतियोगिताएं

19 से 26 सितंबर तक 'मेरे सपनों का भारत' कार्यक्रम के तहत स्कूलों में विकसित भारत की संकल्पना पर चित्रकला और भाषण प्रतियोगिताएं होंगी। 19 सितंबर से 5 अक्टूबर तक 'नमो सेवा अनकही कहानियां' के तहत संगीतमय नाट्य प्रस्तुतियां होंगी। वहीं 26 सितंबर से 5 अक्टूबर तक आंगनबाड़ियों में 'आंगन मिलन सेवा' कार्यक्रम के तहत बच्चों को ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक कहानियां सुनाने के साथ स्वास्थ्य, पोषण, टीकाकरण, एनीमिया और स्वच्छता की जानकारी दी जाएगी। 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक 'बदलाव की कहानियां' कार्यक्रम में लाभार्थियों का चयन कर उनकी सफलता की कहानियां लोगों तक पहुंचाई जाएंगी।

7 अक्टूबर को प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में 'सेवा ज्योति कलश यात्रा' निकाली जाएगी। वहीं 17 सितंबर से 7 अक्टूबर तक 'जल, जन और सेवा संकल्प यात्रा' बड़नगर से वाराणसी तक निकलेगी, जो प्रदेश के सभी जिलों से होकर गुजरेगी। 2 से 10 अक्टूबर तक 'सेवा मेरा योगदान' कार्यक्रम के तहत विभिन्न सेवा गतिविधियां होंगी। इसी अवधि में विकासखंड एवं नगरीय निकाय स्तर पर 'सेवा सेतु' शिविर लगाकर लोगों को शासकीय योजनाओं का लाभ दिलाया जाएगा। 9 और 10 अक्टूबर को 'सेवा के रंग-राष्ट्र के संग' कार्यक्रम में प्रतिभाशाली युवाओं की सहभागिता से रंगोली बनाई जाएगी। 12 अक्टूबर को 'सेवा फर्स्ट-इनोवेशन चैलेंज' में नवाचारकर्ताओं, नव उद्यमियों और नवाचार क्षेत्र से जुड़े लोगों की राष्ट्रीय स्तर पर सहभागिता होगी। 17 अक्टूबर को नई दिल्ली में 'सुशासन सेवा संवाद' आयोजित होगा, जिसमें प्रदेश के पंच, सरपंच और जनप्रतिनिधि शामिल होंगे। इसके अलावा '25 साल-25 कहानियां' कार्यक्रम और 'विकसित भारत संकल्प यात्रा इन्फ्लुएंसर एक्सचेंज' के तहत भी विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जाएंगी।

स्वामी, प्रकाशक , मुद्रक रामकिशन तायल 'फौजी' ने श्रमसाधना प्रिन्टर्स, भगवती निवास पारखजी का बाड़ा दौलतगंज, ग्वालियर से मुद्रित एवं प्रकाशित। सम्पादक : महेश तायल समाचार चयन हेतु पीआरबी एक्ट के तहत अधिकृत
e.mail- Shramsadhnagwl@gmail.com ph. 0751-2625029, 98270 17078, 9425007142 समाचार पत्र में प्रकाशित सभी आलेखों में लेखकों के अपने विचार हैं। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र ग्वालियर होगा।